



सं. 153

अप्रैल - जून 2017

ISSN 0972-2386



कडलमीन

सी एम एफ आर आई समाचार

<http://www.cmfri.org.in>



स्फुटनशाला में उत्पादित पिंक इयर एम्पेरर मछली के संततियों का दृश्य

कृपया पृष्ठ सं. 9 देखें



हर कदम, हर डगर
किसानों का हमसफर
भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद

Agriseach with a human touch

भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद
केन्द्रीय समुद्री मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान

पी.बी. सं. 1603, एरणाकुलम नोर्ट पी.ओ., कोचीन - 682 018, केरल, भारत

कडलमीन

കടൽമീൻ

கடல்மீன்

ಕಡಲ್‌ಮೀನ್

ಕಡಲ್‌ಮೀನ್

କଡଳମୀନ

కడలమీన

കടലമീന

कृषि से संबंधित स्थायी समिति द्वारा मांगलूर अनुसंधान केन्द्र का दौरा	3
अनुसंधान मुख्य अंश	9
प्रदर्शनियाँ	10
प्रशिक्षण कार्यक्रम	10
पुरस्कार	12
आगंतुक	13
राजभाषा कार्यान्वयन	15
कृ वि कें (एरणाकुलम) समाचार	17
कार्यक्रम में सहभागिता	21
मानव संपदा विकास	23
कार्मिक समाचार	23

प्रकाशक

डॉ. ए. गोपालकृष्णन

निदेशक

भा कृ अनु प-केन्द्रीय समुद्री मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान
पोस्ट बॉक्स सं. 1603, एरणाकुलम नोर्त पी.ओ.
कोच्ची - 682 018, केरल, भारत
दूरभाष: 0484-2394867
फैक्स: 91-484-2394909
ई-मेल: director@cmfri.org.in
वेबसाइट: www.cmfri.org.in

संपादक

डॉ. यू. गंगा

संपादकीय मंडल

डॉ. रेखा जे. नायर

डॉ. के.आर. श्रीनाथ

डॉ. एन.एस. जीना

श्रीमती ई.के. उमा

श्री अजु के. राजु

संपादन सहायता

श्री अरुण सुरेन्द्रन

श्री सी.वी. जयकुमार

श्री पी.आर. अभिलाष

हिन्दी संपादन

श्री नवीन कुमार यादव

श्रीमती ई.के. उमा

निदेशक कहते हैं



सभी को हार्दिक अभिवादन !

हमारा संस्थान राष्ट्र की 70 वर्षों से सेवा कर रहा है और इस तिमाही के दौरान संस्थान की उपलब्धियों पर हम गर्व कर सकते हैं। कुछ वर्ष पहले संस्थान ने वाणिज्यिक तौर पर उच्च मूल्य वाली कई मछलियों के प्रजनन एवं संतति उत्पादन में अग्रणी स्थान बनाया है। वर्तमान में कोबिया, सिल्वर पोम्पानो और औरंज ग्रूपर जैसी मछली प्रजातियों के बड़े पैमाने पर संतति उत्पादन की स्थायी प्रौद्योगिकी उपलब्ध है। इस दिशा में संस्थान की उपलब्धियों की मान्यता के रूप में डी ए डी एफ ने कोबिया और सिल्वर पोम्पानो

मछलियों के लिए ब्रूड बैंक विकसित करने हेतु पर्याप्त निधि की सहायता की घोषणा की है। इससे समुद्री मछली पालन के लिए गुणतायुक्त मछली संततियों की पूर्ति की जा सकती है और समुद्री संवर्धन से मछली उत्पादन में बढ़ावा लाया जा सकता है। समुद्री मछली के टिकाऊ उत्पादन के लिए संस्थान के अधिदेश के अनुरूप भा कृ अनु प-सी एम एफ आर आइ और भा कृ अनु प-सी आइ एफ टी के वैज्ञानिकों द्वारा मात्स्यिकी संपदाओं के प्रबंधन के लिए एफ ए ओ-सी सी आर एफ जैसे अंतर्राष्ट्रीय मानकों के अनुपालन हेतु भारतीय समुद्री मात्स्यिकी कोड विकसित किया गया है। आशा है कि यह इस सेक्टर में राज्य और केन्द्रीय स्तर के मात्स्यिकी प्रबंधन निकायों में उचित मार्ग दर्शन और हस्तक्षेप करने में सहायक बन जाएगा। लक्षद्वीप के स्किपजैक ट्यूना की मात्स्यिकी के लिए सुधार योजना, पाक उपसागर में हरा पुलि झींगा का समुद्र रैंचन और समुद्री मात्स्यिकी के क्षेत्र में चुने गए हितधारकों के लिए कुशलता विकास आदि कार्यक्रम सफलतापूर्वक पूरे किए गए। आशा है कि यह पहल आगामी दिनों में बेहतरीन कार्यों के लिए पथ-प्रदर्शक होगी।

अ. गोपालकृष्णन
ए. गोपालकृष्णन
निदेशक

भा कृ अनु प-सी एम एफ आर आइ के बारे में

भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के अधीन कोच्ची में स्थापित केन्द्रीय समुद्री मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान समुद्री मात्स्यिकी और समुद्र कृषि में अनुसंधान और प्रशिक्षण के लिए समर्पित सर्वप्रमुख अनुसंधान संस्थान है।

सी एम एफ आर आइ के तीन क्षेत्रीय केन्द्र जो कि मंडपम कैप, विशाखपट्टणम और वेरावल तथा आठ अनुसंधान केन्द्र भारत की तट रेखा में कार्यरत हैं जो देश के समुद्रवर्ती राज्यों को समुद्री मात्स्यिकी नीति का अनुपालन करने में सहायता प्रदान करते हैं।



समुद्री संवर्धन पर राष्ट्रीय परामर्श बैठक



डॉ. ए. गोपालकृष्णन, निदेशक, भा कृ अनु प-सी एम एफ आर आइ माननीय सचिव, डी ए डी एफ का स्वागत करते हुए

श्री देवेन्द्र चौधरी, आई ए एस, पशु पालन, डेयरी एवं मात्स्यिकी विभाग (डी ए डी एफ), कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय की अध्यक्षता में भा कृ अनु प-सी एम एफ आर आइ के मंडपम क्षेत्रीय केन्द्र में 8 और 9 नवंबर, 2017 को 'भारत में समुद्री संवर्धन और पिंजरा मछली पालन का विकास' पर राष्ट्रीय परामर्श बैठक आयोजित की गयी। संस्थान द्वारा डी ए डी एफ और राष्ट्रीय मात्स्यिकी विकास बोर्ड (एन एफ डी बी), हैदराबाद के संयुक्त सहयोग से कार्यक्रम आयोजित किया गया। डॉ. ए.

गोपालकृष्णन, निदेशक, भा कृ अनु प-सी एम एफ आर आइ ने स्वागत भाषण दिया और विशिष्ट व्यक्तियों का अभिनन्दन किया।

श्री देवेन्द्र चौधरी, आई ए एस, सचिव, डी ए डी एफ ने राष्ट्रीय परामर्श बैठक का उद्घाटन किया और अपने भाषण में उन्होंने आह्वान किया कि व्यापक दिशानिर्देशों से देश में खुला सागर और तटीय समुद्री संवर्धन में सुधार लाया जाना चाहिए। उन्होंने यह कहा कि बृहद स्तर पर समुद्री मछली संततियों का उत्पादन करने के लिए डी ए डी एफ

द्वारा भा कृ अनु प-सी एम एफ आर आइ के अंतर्गत ब्रूड बैंकों और विभिन्न समुद्रवर्ती राज्यों में क्षेत्रीय स्फुटनशालाओं की स्थापना की जानी चाहिए। डॉ. ए. गोपालकृष्णन, निदेशक ने समुद्री संवर्धन कार्यविधियों के लिए पख मछलियों की गुणतायुक्त संततियों की आवश्यकता पर ज़ोर दिया और यह आश्वासन दिया कि संस्थान द्वारा कोबिया, सिल्वर पोम्पानो, इंडियन पोम्पानो, औरंज स्पॉटेड ग्रूपर और पिक इयर एम्परेर मछलियों की संततियों का बड़े पैमाने पर उत्पादन करने की प्रौद्योगिकी विकसित की गयी है। राष्ट्रीय मछली संतति उत्पादन कार्यक्रम के समन्वयन के लिए मंडपम क्षेत्रीय केन्द्र नोडल केन्द्र के रूप में कार्य करेगा और वहाँ से देश के विभिन्न समुद्रवर्ती राज्यों में स्थित क्षेत्रीय हैचरियों को मछली संततियों की आपूर्ति की जाएगी।

श्री आदित्य कुमार जोशी, आई ए एस, संयुक्त सचिव, डी ए डी एफ, श्री गगनदीप सिंह बेदी, प्रधान सचिव, तमिलनाडु, श्री वी.पी. दंडपाणी, मात्स्यिकी निदेशक, तमिलनाडु, श्री जी.एस. समीरन, अतिरिक्त मात्स्यिकी निदेशक, रामनाथपुरम, श्री एस. नटराजन, जिलाधीश, रामनाथपुरम, श्री राम शंकर नाइक, मात्स्यिकी आयुक्त, आंध्र प्रदेश सरकार और डॉ. पी. प्रवीण, सहायक महानिदेशक (समुद्री मात्स्यिकी), भा कृ अनु प भी बैठक में उपस्थित थे।



कोबिया के पिंजरे फार्म का मुआइना

भा कृ अनु प-सी एम एफ आर आइ, सी एस

भारत में समुद्री मछली अवतरण आकलन - 2016 का लोकार्पण



समुद्री मछली अवतरण आकलन 2016 का प्रेस रिलीज़

देश में वर्ष 2016 के दौरान समुद्री मछली अवतरण का आकलन दिनांक 20 मई 2017 को जारी किया गया, जिसके अनुसार भारत के कुल समुद्री मछली अवतरण में पिछले वर्ष की अपेक्षा वर्ष 2016 के दौरान 6.6 प्रतिशत की वृद्धि हुई है और उत्पादन वर्ष 2015 के 3.40 मिलियन टन की अपेक्षा 3.63 मिलियन टन तक बढ़ गया।

लगातार चार वर्षों के दौरान गुजरात 7.74 लाख टन के साथ मछली उत्पादन में प्रथम स्थान पर रहा और इसके बाद तमिलनाडु (7.07 लाख टन) और कर्नाटक (5.29 लाख टन) दूसरे और तीसरे स्थान पर आए। केरल 5.23 लाख टन के उत्पादन के साथ वर्ष 2016 में चौथे स्थान पर रहने के बावजूद कुल समुद्री मछली पकड़ में पिछले वर्ष

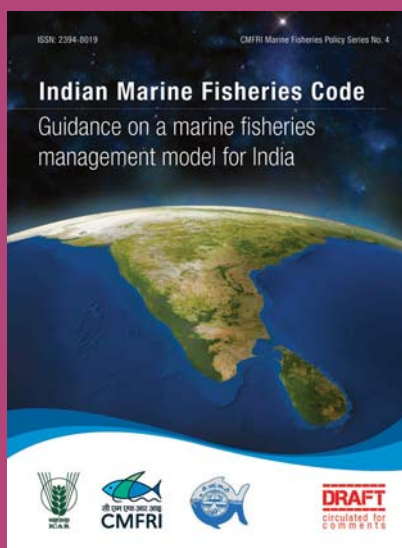
की अपेक्षा 8% की वृद्धि आकलित की गयी। भारत की राष्ट्रीय मछली बांगड़ा 2.5 लाख टन उत्पादन से तारली (2.44 लाख टन) से आगे प्रमुख संपदा के रूप में रही। बुल्स आइ (प्रियाकान्थस प्रजाति), जिसका उत्पादन वर्ष 2015 में 4.691 टन था, का अवतरण कर्नाटक के पश्चिम तट से प्राप्त अधिकतम योगदान के साथ इस वर्ष 1.3 लाख टन तक बढ़ गया, जो वर्ष 2016 के दौरान हुई उल्लेखनीय प्रगति थी। पश्चिम बंगाल में हिल्सा शाड के उत्पादन में वर्ष 2015 की तुलना में चार गुना की भारी वृद्धि आकलित की गयी। इसी समय आंध्रा प्रदेश (-35%) और उड़ीषा (-17%) में चक्रवात की वजह से मत्स्यन दिन कम होने के कारण वर्ष 2016 के दौरान मछली पकड़ में उल्लेखनीय कमी रही।

वर्ष 2016 के दौरान देश में अवतरण केन्द्रों के स्तर पर समुद्री मछली अवतरण का आकलित मूल्य वर्ष 2015 की अपेक्षा 20.7% की वृद्धि के साथ 48,381 करोड़ रुपए है। खुदरा स्तर पर आकलित मूल्य पिछले वर्ष की अपेक्षा 12.4% की वृद्धि के साथ 73,289 करोड़ रुपए है।

डॉ. ए. गोपालकृष्णन, निदेशक, सी एम एफ आर आइ ने आकलन जारी किया और डॉ. टी.वी. सत्यानन्दन, अध्यक्ष, मात्स्यिकी संपदा निर्धारण अनुसंधान खोज जाँच-परिणाम प्रभाग ने प्रस्तुत किया। डॉ. के. सुनिल मोहम्मद, डॉ. जी. महेश्वरुडु, डॉ. प्रतिभा रोहित, डॉ. आर. नारायणकुमार और डॉ. पी.यु. ज़क्करिया आदि विभिन्न प्रभागों के अध्यक्ष भी इस अवसर पर उपस्थित थे।

भारतीय समुद्री मात्स्यिकी कोड

खाद्य एवं कृषि संगठन (एफ ए ओ) ने वर्ष 1995 में संबंधित देशों को अपनी प्रभावकारी मात्स्यिकी प्रबंधन योजना बनाने के मार्गदर्शन के रूप में उत्तरदायित्वपूर्ण मात्स्यिकी के लिए आचरण संहिता (एफ ए ओ - सी सी आर एफ) तैयार की है। भारत में कई तरह के अनुपालन होने पर भी इस संहिता का उपयोग नहीं किया जाता था। अब, भा कृ अनु प-सी एम एफ आर आइ और भा कृ अनु प-सी आइ एफ टी, जो भारत के प्रमुख दो मात्स्यिकी संस्थान हैं, के वैज्ञानिक देश में एफ ए ओ - सी सी आर एफ का प्रभाव उपयोग करने के दिशा निर्देश विकसित करने के लिए आगे आए हैं। भारतीय समुद्री मात्स्यिकी कोड (आइ एम सी) को उचित नाम देते हुए, देश में समुद्री मात्स्यिकी के प्रबंधन में प्रेरणात्मक परिवर्तन लाने के लिए यह सहायक होगा। आइ एम सी एफ ए ओ - सी सी आर एफ के सारे उप-लेखों का विवरण



देता है और किस तरह और किसके द्वारा इसका कार्यान्वयन किया जाना, इसके बारे में सूचना प्रदान करता है। इसके अतिरिक्त देश में अनुचित रूप से मात्स्यिकी का प्रबंधन करने वालों के आगे कई नए निकायों की आवश्यकता का प्रस्ताव भी करता है। आशा है कि देश के केन्द्रीय और राज्य स्तरीय मात्स्यिकी प्रबंधन निकायों को आइ एम एफ सी को भविष्य में दिशा निर्देश के रूप में उपयोगी होंगे।

मोहम्मद, के.एस., विजयकुमारन, के., ज़क्करिया, पी.यु., सत्यानन्दन, टी.वी., महेश्वरुडु, जी., कृपा, वी., नारायणकुमार, आर., रोहित, प्रतिभा जोषी, के.के., शंकर, टी.वी., एड्विन, लीला, अशोक कुमार, के., बिन्दु, जे., गोपाल, निकिता और प्रवीण, पी. (2017) भारतीय समुद्री मात्स्यिकी कोड: भारत के लिए समुद्री मात्स्यिकी प्रबंधन नमूना पर दिशा निर्देश. समुद्री मात्स्यिकी नीति श्रेणी (4) ISBN ISSN 2394-8019

लक्षद्वीप स्किपजैक ट्यूना लंबी डोर (पॉल एंड लाइन) मात्स्यिकी के लिए एम एस सी प्रमाणीकरण

अरब सागर में स्थित लक्षद्वीप संघ राज्य क्षेत्र आहार और आजीविका के लिए मछली विविधता पर निर्भर है। द्वीप समूह के मछली अवतरण में 1950 के दशक के 500 टन की तुलना में हाल के वर्षों के में 12,000 टन की वृद्धि हुई। लक्षद्वीप की ट्यूना मात्स्यिकी हेतु जीवित चारा सहित, द्वीप के लिए विशिष्ट देशज तकनीक 'पॉल एंड लाइन' मात्स्यिकी का उपयोग किया जाता है। लक्षद्वीप के कुल मछली अवतरण में 50% से अधिक स्किपजैक ट्यूना

है। वर्ष 2016 में एम एस सी पूर्व-निर्धारण किया गया था और डब्ल्यू डब्ल्यू एफ-भारत, भा कृ अनु प-सी एम एफ आर आइ तथा लक्षद्वीप मात्स्यिकी विभाग द्वारा मछली सुधार परियोजना (एफ आइ पी) का कार्यान्वयन किया जा रहा है। एफ आइ पी से एम एस सी निर्धारण की ओर आने तक टिकाऊपन का स्तर बढ़ाए जाने में सुविधा हो जाएगी। इस क्षेत्र में प्रमाणित लंबी डोर मात्स्यिकी केवल मालदीव्स में चालू है। एम एस सी प्रमाणीकरण के प्रयासों में

जिसमें विभिन्न हितधारक उपस्थित थे, में पहचाना गया था। इस बैठक में लक्षद्वीप में मजबूत आंकड़ा संग्रहण व्यवस्था की आवश्यकता, टिकाऊ विदोहन सुनिश्चित करने हेतु जीवित चारा मछली के लिए प्रबंधन योजना, कम प्रभावपूर्ण मत्स्यन परिचालन और भा कृ अनु प-सी एम एफ आर आइ की सहायता से तुरंत ही शुरू की जाने वाली ट्यूना और जीवित चारा मछली की मात्स्यिकी प्रबंध योजना की आवश्यकता पर ज़ोर दिया। लक्षद्वीप मात्स्यिकी,



लक्षद्वीप में आयोजित हितधारक कार्यशाला के सहभागी

(कैटसुवॉनस पेलासिस) है, इसके बाद येलोफिन (थन्नस अल्बाकारस) और कम मात्रा में कवाकवा (यूथिन्नस एफिनिस) और अन्य छोटी ट्यूनाओं का योगदान है। द्वीप समूह के प्रवाल क्षेत्रों के पास के लैगूनों से छोटी जालाक्षि वाले जालों द्वारा पकड़ी जाने वाली नीली स्प्रेट (स्प्रेटलोइडस डेलिकाटुलस) मछली को प्रमुख जीवित आहार के रूप में उपयोग किया जाता है। स्किपजैक ट्यूना मात्स्यिकी मछली सुधार योजना तक प्रवेश करते हुए भारत में से एक और एम एस सी प्रमाणीकरण के निकट पहुँची गयी

भा कृ अनु प-सी एम एफ आर आइ ज्ञान सहभागी के रूप में शामिल है। मिनिकोय में संस्थान के भूतपूर्व अनुसंधान केन्द्र और मुख्यालय से परिचालित विविध परियोजनाओं द्वारा संग्रहित मात्स्यिकी, स्टॉक निर्धारण, जीवविज्ञान, पारितंत्र आदि वैज्ञानिक सूचनाएं डबल्यू डबल्यू एफ-भारत द्वारा किए जाने वाले एम एस सी प्रमाणीकरण का आधार स्तंभ होगा। मात्स्यिकी का पूर्ण निर्धारण के दौरान पूरी की जाने वाली कमियों को डबल्यू डबल्यू एफ-भारत द्वारा जून, 2016 में कवरत्ती में आयोजित पूर्व निर्धारण बैठक,

विशेषतः ट्यूना और चारा मछली पर अधिक जानकारी उपलब्ध कराने हेतु संस्थान द्वारा हाल ही में एक समर्पित परियोजना शुरू की गयी है। इसका उद्देश्य लक्षद्वीप के लिए मात्स्यिकी प्रबंधन के लिए आवास तंत्र अभिगम (ई ए एफ एम) पर आधारित मात्स्यिकी प्रबंधन योजना तैयार करना है। लक्षद्वीप में एम एस सी द्वारा प्रमाणित ट्यूना मात्स्यिकी की श्रृंखला के अंतर्गत लक्षद्वीप के ट्यूना उत्पादों के लिए उच्च मूल्य प्रत्याशित है।

(वेलापवर्ती मात्स्यिकी प्रभाग की रिपोर्ट)

संस्थान अनुसंधान परिषद की 24वीं बैठक

संस्थान अनुसंधान परिषद (आइ आर सी) की 24वीं बैठक 15 से 19 मई, 2017 तक मुख्यालय में आयोजित की गयी। इस दौरान आयोजित विचार-विमर्श में कुल 143 वैज्ञानिकों ने भाग लिया। निदेशक एवं आइ आर सी के अध्यक्ष डॉ. ए. गोपालकृष्णन ने अपने शुरुआती भाषण में वर्ष 2016-17 के दौरान संस्थान की उपलब्धियों पर

प्रकाश डाला। संस्थान की 33 गृहांदर परियोजनाओं और 34 बाहरी वित्त पोषित परियोजनाओं के प्रधान अन्वेषकों ने खोज परिणामों को प्रस्तुत किया और इस पर सक्रिय चर्चा भी थी। विचार-विमर्श के उपरांत नयी परियोजनाएं / वर्तमान परियोजनाओं की उप-परियोजनाएं प्रस्तुत की गयीं और इनका अनुमोदन भी किया गया। आइ आर सी ने तकनीकी

कार्यक्रमों में कई परिवर्तनों के लिए अनुमोदन दिया और अगली आइ आर सी से पहले कार्रवाई की जाने के लिए लगभग 50 मुद्दों की सूची बनायी। आइ आर सी की कार्यवाही और कार्रवाई रिपोर्ट सी एम एफ आर आइ इन्टरनेट वेबपेज में उपलब्ध है।

(डॉ. के.एस. मोहम्मद, अध्यक्ष, मोलस्क मात्स्यिकी प्रभाग एवं सचिव, आइ आर सी की रिपोर्ट)



आइ आर सी की 24वीं बैठक का दृश्य

माननीय केन्द्रीय कृषि एवं किसान कल्याण राज्य मंत्री श्री सुदर्शन भगत का दौरा



मछुआरा समिति के प्रतिनिधि माननीय मंत्री के साथ विचार-विमर्श करते हुए



समुद्री मछुआरा दम्पति को मछली संतति प्रदान करते हुए

भा कृ अनु प-सी एम एफ आर आइ मुख्यालय में माननीय केन्द्रीय कृषि एवं किसान कल्याण राज्य मंत्री श्री सुदर्शन भगत की अध्यक्षता में मछुआरा प्रतिनिधियों और वैज्ञानिकों का विचार-विमर्श आयोजित किया गया। संस्थान के प्लेटिनम जयंती समारोह के भाग के रूप में भा कृ अनु प-सी एम एफ आर आइ ने 15 वर्षों से लेकर गहरे समुद्र में मत्स्यन करने वाले समुद्री मछुआरा दम्पति श्रीमती रेखा और श्री कार्तिकेयन को समुद्री पिंजरे में मछली पालन के लिए आवश्यक वित्तीय एवं तकनीकी सहायता प्रदान करने के लिए चिन्हित किया। इस अवसर पर श्री सुदर्शन भगत ने उनको बधाई दी और संस्थान द्वारा प्रायोजित मछली पालन पिंजरे में संभरण करने के लिए मछली संततियों को प्रदान किया।



माननीय मंत्री और वैज्ञानिकों के बीच विचार-विमर्श का दृश्य

समुद्री शैवालों से मोटापा कम करने का न्यूट्रास्यूटिकल उत्पाद

मोटापा और कोलेस्टेरोल कम करने के लिए विकसित कडलमीन TM नामक एन्टीहाइपरकोलेस्टेरोलैमिक एक्स्ट्रेक्ट (कडलमीन™ ACE) विकसित करके मोटापा प्रबंधन की प्रमुख भारतीय कंपनी वी एल सी सी को विपणन के लिए सौंपा गया। डॉ. ए. गोपालकृष्णन, निदेशक, भा कृ अनु प-सी एम एफ आर आइ ने सन्दीप अहूजा, निदेशक, वी एल सी सी ग्रुप और डॉ. ए.एच. जैदी, फर्म के कार्यकारी उप-अध्यक्ष (आर एंड डी) की उपस्थिति में लाइसेंस समझौता पर हस्ताक्षर किया।

समुद्री शैवाल न्यूट्रास्यूटिकल के लाइसेंस समझौता पर हस्ताक्षर



मूतकुन्नम में पालन की गयी शक्तियों का सफलतापूर्वक संग्रहण

मूतकुन्नम में महिला स्वयं सहायक ग्रुपों द्वारा पालन की गयी शक्तियों का जून, 2017 महीने में सफलतापूर्वक संग्रहण किया गया। पालन अवधि के दौरान शक्तियाँ 86.7 ± 25.7 मि.मी. की कवच

लंबाई के आकार तक बढ़ गयीं। यहाँ से कुल 23.8 टन शक्तियों का उत्पादन किया गया और इसके मांस के लिए 600/- कि.ग्रा. की दर पर फार्म गेट मूल्य प्राप्त किया। निर्मलीकरण करके

उबली गयी शक्तियों को कोच्ची में भा कृ अनु प-सी एम एफ आर आइ के ए टी आइ सी बिक्री काउन्टर द्वारा बेचा गया।

(मोलस्कन मात्स्यिकी प्रभाग की रिपोर्ट)

गुजरात में टी एस पी के अंतर्गत लगातार पांचवां मछली संग्रहण

शूली महाचिंगट, पानुलिरस पोलीफागस सौराष्ट्र तट के 'सिदी' जनजातियों के लिए पूर्णकालिक आजीविका और आर्थिक लाभ का उपाय बन गया है। भा कृ अनु प-सी एम एफ आर आइ के वेरावल क्षेत्रीय केन्द्र द्वारा वर्ष 2011 से लेकर समुद्री पिंजरा मछली पालन में सामूहिक पालन पर प्रदर्शन, प्रशिक्षण और व्यावहारिक प्रशिक्षण दिया जा रहा है। संस्थान के ट्राइबल सब प्लान के अंतर्गत वर्ष 2012-13 में शुरू किए गए वाणिज्यिक समुद्री पिंजरा पालन फार्म से पंजीकृत सहकारी समूह भारत आदिमजुत मत्स्योद्योग सहकारी मंडली-तलाला लाभान्वित बन गया। फार्म का परिचालन स्वयं करने में सशक्त होकर दिनांक 13 अप्रैल, 2017 को लगातार पांचवां मछली संग्रहण किया गया। महाचिंगट के संततियों के मौसमिक उपलब्धता और निधि की कमी की



वजह से केवल तीन पिंजरों में महा चिंगट का संभरण किया गया और समुद्री शैवाल कापाफाइकस अल्वरेज़ी के एकीकृत बहु पौष्टिक जलजीव पालन (आइ एम टी ए) के लिए बाकी दो पिंजरों का उपयोग किया गया। महाचिंगटों की बढ़ती हुई मांग को देखते हुए भागिक रूप से फसल संग्रहण किया गया और तीनों पिंजरों से लगभग 350 ग्राम भार वाले 118, 126 और 130 कि.ग्रा. महाचिंगटों का संग्रहण किया गया और जीवित रूप से निर्यात करने हेतु इनके लिए प्रति किलोग्राम के लिए 1200 रुपए प्राप्त हुए।

(डिवु डी, मोहम्मद कोया के., श्रीनाथ के.आर., ज्ञान रंजन दास, विनय कुमार वास, सुरेश मोज्जादा, फोफान्डी एम डी, कपिल सुखदाने और राजेश कुमार प्रधान की रिपोर्ट)

मेरीकल्वरिस्टों की पूर्व छात्र बैठक

देश में समुद्री संवर्धन क्षेत्र में शिक्षा, अनुसंधान एवं विकास के 37 वर्षों के यादगार में भा कृ अनु प-सी एम एफ आर आइ, कोच्ची में 8 और 9 अप्रैल, 2017 को आयोजित पूर्व छात्र बैठक में विख्यात वैज्ञानिकों, नीतिकारों, अनुसंधान प्रबंधकों, शिक्षाविदों, उद्योगपतियों, बैंककर्मियों और प्रशासकों, जिन्होंने भा कृ अनु प-सी एम एफ आर आइ में समुद्री संवर्धन शिक्षा कार्यक्रम पूरा किया है, ने भाग लिया।

पद्मभूषण प्रोफसर एम.वी.पाइली, विख्यात शिक्षाविद एवं भूतपूर्व कुलपति, कोचीन विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, भा कृ अनु प-सी एम एफ आर आइ के भूतपूर्व निदेशक गण डॉ. ई.जी. सैलास और डॉ. पी.एस.वी.आर. जेम्स, सेवानिवृत्त प्रधान वैज्ञानिक गण डॉ. वेदव्यास राव और डॉ. ए. नोबिल इस अवसर पर उपस्थित थे। डॉ. जे.के. जेना, उप महानिदेशक (मात्स्यिकी), भा कृ अनु प, डॉ. सी. वासुदेवप्पा, कुलपति, कृषि एवं वनस्पति



प्रोफसर पाइली सभा को संबोधित करते हुए

विज्ञान, शिवमोगा, डॉ. के.के. विजयन, निदेशक, भा कृ अनु प-सी आइ बी ए और डॉ. ए. गोपालकृष्णन, निदेशक, भा कृ अनु प-सी एम एफ आर आइ सहित देश के विभिन्न भागों से लगभग 200 पूर्व छात्रों ने बैठक में भाग लिया।

भा कृ अनु प-सी एम एफ आर आइ में समुद्री संवर्धन के स्नातकोत्तर और डॉक्टरी कार्यक्रमों के पूर्व छात्र भारत की समुद्री मात्स्यिकी एवं जलजीव पालन के क्षेत्रों में नीति निर्माण, अनुसंधान, प्रशासन

एवं उद्यमिता की पहलों में अब भी सक्रिय हैं। एफ ए ओ-यु एन डी पी के मार्गदर्शन एवं निधिबद्धता से कोचीन विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय (सी यु एस ए टी) की संबद्धता के साथ भा कृ अनु प-सी एम एफ आर आइ में वर्ष 1979 में समुद्री संवर्धन के स्नातकोत्तर और पीएच.डी. कार्यक्रम शुरू किए गए। बाद में वर्ष 1993 में इन कार्यक्रमों को केन्द्रीय मात्स्यिकी शिक्षा संस्थान, मुम्बई में स्थानांतरित किया गया।



पूर्व छात्र बैठक के सहभागियों का दृश्य

पिंक इयर एम्परर मछली का संतति उत्पादन एवं आपूर्ति

पिंक इयर एम्परर मछली बाजार में उच्च मांग, स्वादिष्ट मांस, दृढ़ स्वभाव और पालन के दौरान कचरा मछली और मिश्रित खाद्य लेने की क्षमता से समुद्री संवर्धन के लिए उचित प्रजाति मानी जाती है। पुनःपरिसंचरण जलजीव पालन व्यवस्था (आर ए एस) से अंडशावक मछली में होमोन उत्प्रेरण के बिना निषेचित अंडों का संग्रहण

करके 5 टन की क्षमता वाले डिंभक पालन टैंक में पालन किया गया। इस तरह उत्पादित मछली संततियों को आयिरामतेंगु में स्थित केरल जलजीव पालन विकास प्राधिकरण (ए डी ए के), केरल सरकार, भा कृ अनु प-सी एम एफ आर आइ का मद्रास अनुसंधान केन्द्र और तिरुवनंतपुरम के मछली पालनकारों को प्रदान किया गया। मछली संततियों

को तिरुवनंतपुरम से चेन्नई तक वाहन में सफलतापूर्वक पहुँचाया गया। लवणता सह्यता परीक्षणों से यह व्यक्त हुआ कि मछली 5 पी पी टी की कम लवणता में सहन क्षमता से युक्त है, अतः खारा पानी में भी इसका पालन किया जा सकता है।

(विधिजम अनुसंधान केन्द्र की रिपोर्ट)

तटीय कर्नाटक के लिए पारितंत्र सेवाओं का आकलन

कर्नाटक राज्य 320 कि.मी. की तटरेखा, 27,000 वर्ग कि.मी. के महाद्वीपीय शेल्फ और 87,000 वर्ग कि.मी. का विशिष्ट आर्थिक क्षेत्र, 5.20 लाख हेक्टेयर अंतस्थलीय जल स्रोत, जिसमें 2.93 लाख हेक्टे. के बड़े और छोटे टैंक सम्मिलित हैं, 2.67 लाख हेक्टे. जलाशय और 5,813 कि.मी. की लंबाई की

नदियाँ सम्मिलित है, से युक्त है। कर्नाटक के तटीय क्षेत्र में 13 प्रमुख नदियाँ हैं। कर्नाटक के 70,000 हेक्टे. के जल प्रसार क्षेत्र से युक्त 26 नदीमुख और 8,000 हे. के खारा पानी क्षेत्र से राज्य के तीन जिले समुद्री नदीमुख और नदीतटीय जैवविविधता से समृद्ध हैं। कर्नाटक तट के तटीय पारितंत्र की सेवाओं और

प्राकृतिक पूँजी प्रति वर्ष 518.70 बिलियन यू एस डॉलर आकलित की गयी है। इससे प्राकृतिक संपदाओं के परिरक्षण और उचित प्रबंधन की प्रधानता का संकेत मिलता है। परियोजना 'चुने गए समुद्री पारितंत्र के जैव इन्वेन्ट्री और समुद्री जीवों का मूल्यांकन' के अंतर्गत यह कार्य किया गया।

(मांगलूर अनुसंधान केन्द्र की रिपोर्ट)

पाक उपसागर में हरा पुलि झींगे का समुद्र रैंचन

पाक उपसागर और मन्नार की खाड़ी में आनाय जालों द्वारा हरा पुलि झींगे (पेनिअस सेमीसल्केटस) का विदोहन किया जाता है। अंडशावकों और किशोरों के अतिमत्स्यन से चिंगट संपदा में हुए ह्रास से चिंगट अवतरण में नकारात्मक प्रभाव देखा गया। इस समस्या के समाधान के रूप में पेनिअस सेमीसल्केटस का समुद्र रैंचन फिर से शुरू किया गया। भा कृ अनु प-सी एम एफ आर आइ द्वारा 10-15 वर्षों से पहले इसी तरह का कार्य किया गया था। इस क्षेत्र में चिंगट संपदाओं की पुनःपूर्ति का उचित स्थान देखा गया। पश्च डिंभक 35 (47 दिनों के पश्च डिंभक) अवस्था के लगभग दो लाख चिंगट संततियों को दिनांक 11 मई, 2017 को पाक उपसागर के तोनितुरे में निकाला गया। मछुआरा समितियों, मछुआरों, राज्य मात्स्यिकी विभाग के कर्मिकों और भा कृ अनु प-सी एम एफ आर आइ



चिंगट संततियों के समुद्र रैंचन का दृश्य

के वैज्ञानिकों ने इस कार्यक्रम में सक्रिय रूप से भाग लिया। इस तरह के कार्य नियमित रूप से किए जाएंगे और स्थानीय मछुआरों के सहयोग से

वाणिज्यिक प्रमुख ब्लू स्विम्मर केकड़े का समुद्र रैंचन भी किया जाएगा।

(डॉ. ए.के. अब्दुल नाज़र, प्रभारी वैज्ञानिक, मंडपम क्षेत्रीय केन्द्र की रिपोर्ट)

समुद्री स्तनियों का अवलोकन



पाक उपसागर के दक्षिण पुदुकुडी के पुलिन में दिनांक 21.04.2017 को लगभग 250 से.मी. की लंबाई और 150 कि.ग्रा. के भार वाली एक नर समुद्री गाय को पाया गया। भारत में ड्यूगोंग विशेष तौर पर समुद्री घास के क्षेत्रों में पाए जाते हैं और इन्हें वन्य जीव (संरक्षण) अधिनियम, 1972 की सूची 1 में रखा गया है।

(विनोदकुमार, एस.तिरुमलैसेल्वन, एम.राजकुमार, एस.एम.सिकन्दर बाचा, मंडपम क्षेत्रीय केन्द्र की रिपोर्ट)

पाक उपसागर के पुलिन में पायी गयी समुद्री गाय का दृश्य

मोलस्कन संपदाओं का असाधारण अवतरण

मुनम्बम नदीमुख (केरल) में पाफिया मलबारिका का अवतरण साधारणतया जनवरी से मई के दौरान शुरू होकर जून में मानसून के आरंभ में समाप्त होता है। इस वर्ष पी. मलबारिका का असाधारण

अवतरण जून में भी जारी रहा। मछुआरों द्वारा संग्रहित सीपी को अवतरण केन्द्र में प्रति किलोग्राम के लिए 20/- रुपये प्राप्त हुआ। फोर्ट कोच्ची बीच के दक्षिण भाग में अप्रैल-मई, 2017 के दौरान सीपी

सुनेट्टा स्क्रिप्टा का असाधारण और भारी अवतरण हुआ। लगभग 13.3 से 43.7 मि.मी. के आकार परास के सीपियों का घनत्व और वजन क्रमशः 2860/वर्ग मी. और 5.0 कि.ग्रा./ वर्ग मी. था।

(मोलस्कन मात्स्यिकी प्रभाग की रिपोर्ट)

समुद्री वातावरण में प्लास्टिक प्रदूषण

संस्थान के मात्स्यिकी पर्यावरण प्रबंधन प्रभाग द्वारा मैंग्रोव राइजोफोरा मक्रोनेटा के पौधों को उगाने हेतु एक नवोन्मेषी प्लवमान नर्सरी की संरचना करके बनायी गयी। उपयोग की गयी पानी की बोतलों और लकड़ी के रीपरों से प्लवमान बेड़ों का निर्माण किया गया जो द्विदित एवं कीचड़ युक्त ग्रीबों में उगाए गए 50 पौधों का भार वहन कर सकता है, और इसे पश्चजल में रखा गया है। मैंग्रोव की पुनःस्थापना के लिए मैंग्रोव पौधे महत्वपूर्ण हैं और अपशिष्ट के रूप में छोड़ी गयी पानी की बोतलों से स्वच्छ पर्यावरण के लिए इस तरह का नवोन्मेषी उपयोग प्रत्याशित है।



छोड़ी गयी प्लास्टिक बोतलों से बनाया गया प्लवमान बेड़ा

प्रदर्शनियाँ

विभिन्न अनुसंधान केन्द्र ने तिरुवनंतपुरम नगर निगम द्वारा 20 अप्रैल से 7 मई, 2017 के दौरान आयोजित विषु कणी -प्रदर्शनी-2017 में भाग लिया। केन्द्र के स्टॉल को सरकारी एवं निजी वर्ग के स्टॉल के अंतर्गत तीसरा पुरस्कार प्राप्त हुआ।

भा कृ अनु प-सी एम एफ आर आइ ने कोल्लम में 27-29 मई, 2017 के दौरान आयोजित मत्स्योत्सव प्रदर्शनी में भाग लिया। इस कार्यक्रम के दौरान आयोजित मत्स्य अदालत का उद्घाटन श्री पिणरायी विजयन, माननीय केरल मुख्य मंत्री ने किया। राज्य

मात्स्यिकी मंत्री श्रीमती जे.मेर्सीकुट्टिअम्मा भी इस अवसर पर उपस्थित थी। डॉ.एन.अश्वती और ए टी आइ सी तथा एस ई ई टी टी डी के कर्मचारियों ने

प्रौद्योगिकी एवं जलजीवशाला सेक्टरों में भा कृ अनु प-सी एम एफ आर आइ के स्टालों का समन्वय किया।



प्रशिक्षण कार्यक्रम

कुशलता विकास कार्यक्रम

कारवार अनुसंधान केन्द्र में तटीय विकास प्राधिकरण (सी डी ए), मंगलूरु के सहयोग से 7 अप्रैल, 2017 को उत्तर कन्नड जिले की मछुआरियों के लिए 'शंबु पालन' पर एक दिवसीय कुशलता वर्धन कार्यक्रम आयोजित किया गया। जिले के विभिन्न भागों से आयी कुल 74 मछुआरियों को बेड़ा तरीके से शंबु पालन पर प्रशिक्षण दिया गया। डॉ. के.के. फिलिप्पोस, प्रभारी वैज्ञानिक ने समुद्री संवर्धन एवं इससे जुड़ी हुई गतिविधियों और शंबु पालन के व्यावहारिक प्रशिक्षण के बारे में सहभागियों को जागरूक किया। श्री मनोहर कलास ए.ई.ई., सी डी ए, मंगलूरु समापन

कार्यक्रम में अध्यक्ष रहे और सभी प्रशिक्षणार्थियों को प्रमाण पत्र प्रदान किए गए।

ओडीषा के तटीय युवाओं के लिए 11 से 25 अप्रैल, 2017 के दौरान समुद्री मछलियों की पहचान



रस्सियों में शंबु के संततियों के रोपण पर व्यावहारिक प्रशिक्षण



कारवार अनुसंधान केन्द्र में प्रशिक्षणार्थियों को प्रमाण पत्र का वितरण

और आंकड़ा संग्रहण में कुशलता विकास कार्यक्रम आयोजित किया गया।

सी एम एफ आर आइ मुम्बई अनुसंधान केन्द्र में



जे एन पी टी, उरान की वित्तीय सहायता से 'खुला सागर पिंजरा मछली पालन और प्रदर्शन' विषय पर प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया। महाराष्ट्र के पालघर जिले के 20 मछुआरों को 17 से 22 अप्रैल, 2017 के दौरान भा कृ अनु प-सी एम एफ आर आइ के मुम्बई और कारवार अनुसंधान केन्द्रों



कारवार अनुसंधान केन्द्र में प्रशिक्षणार्थी



मुम्बई अनुसंधान केन्द्र में प्रशिक्षणार्थियों को प्रमाण पत्र वितरण कार्यक्रम

में प्रशिक्षित किया गया।

मंडपम और चेन्नई स्थित भा कृ अनु प-सी एम एफ आर आइ के क्षेत्रीय अनुसंधान केन्द्रों में तमिल नाडु के राज्य मात्स्यिकी विभाग के एफ आइ एम एस यु एल-11 परियोजना के अंतर्गत मात्स्यिकी अधिकारियों के लिए 4-7 अप्रैल, 2017 के दौरान मछली वर्गीकरण विज्ञान और प्रजाति की पहचान विषय पर प्रशिक्षण आयोजित किया गया। मंडपम क्षेत्रीय केन्द्र में आयोजित कार्यक्रम में कुल 16 व्यक्तियों ने



मछली की पहचान पर प्रशिक्षण

इन्डो-जर्मन जैवविविधता कार्यक्रम के अंतर्गत भारतीय वन्य जीव संस्थान, देहरादून के माध्यम से जी आइ जेड द्वारा प्रशिक्षण कार्यक्रम प्रायोजित किए गए। गुजरात सरकार के मात्स्यिकी विभाग, वन विभाग, मराइन नेशनल पार्क, जामनगर, गुजरात पारितंत्रीय शिक्षा एवं अनुसंधान फाउन्डेशन, भारतीय तट रक्षक एवं भारतीय वन्य जीव संस्थान के कर्मियों ने कार्यक्रम में भाग लिया। प्रशिक्षण के दौरान पालन खेत का दौरा, भूमिका और विचार-विमर्श सत्र भी थे।



चेन्नई में आयोजित आंकड़ा प्रविष्टि एवं विश्लेषण प्रशिक्षण के प्रतिभागी गण

भाग लिया। मद्रास अनुसंधान केन्द्र में आयोजित प्रशिक्षण में तिरुवल्लूर, चेन्नई, कांचीपुरम और विल्लुपुरम जिलों से कुल 12 कर्मियों ने भाग लिया। एफ आइ एम एस यु एल (घटक 3) के अंतर्गत 5-9 जून, 2017 के दौरान आंकड़ा प्रविष्टि एवं विश्लेषण प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम में तमिल नाडु के तटीय जिलों से 12 आंकड़ा संग्रहण सहायकों, मात्स्यिकी सहायक निदेशकों (सांख्यिकी) और मात्स्यिकी निरीक्षकों ने भाग लिया। इस दौरान व्यावहारिक प्रशिक्षण भी आयोजित किया गया।

वैरावल क्षेत्रीय केन्द्र में दो प्रशिक्षण कार्यक्रम, जो कि 19 से 21 अप्रैल, 2017 के दौरान 'तटीय एवं समुद्री संपदाओं के परिरक्षण हेतु समुद्री मात्स्यिकी का टिकाऊ प्रबंधन' विषय पर (वरिष्ठ स्तरीय अधिकारियों के लिए) और 24 से 26 अप्रैल, 2017 के दौरान (क्षेत्र स्तरीय प्रबंधकों के लिए आयोजित)।

गृहांदर परियोजनाओं की प्रारंभिक कार्यशालाएं

समुद्री जैवविविधता प्रभाग ने भा कृ अनु प-सी एम एफ आर आइ, कोच्ची में 19-20 जून, 2017 के दौरान भारतीय तट पर जीवविविधता तौर पर सुभेद्य क्षेत्रों के लिए परिरक्षण योजना का विकास विषय पर, 21 जून, 2017 को साइफोजोअन एवं क्यूबोजोअन जेली फिश जैवविविधता तथा वितरण विषय पर और 22-23 जून, 2017 के दौरान प्रवाल झाड़ियों में लचीलापन क्षमता का निर्धारण विषय पर कार्यशालाएं आयोजित की गयीं।

वेलापवर्ती मात्स्यिकी प्रभाग ने मुख्यालय में दिनांक 28 जून, 2017 को लक्षद्वीप की टिकऊ समुद्री मात्स्यिकी के लिए संपदा निर्धारण और प्रबंधन ढांचा विषय पर कार्यशाला आयोजित की।

ए टी आइ सी राजस्व उत्पादन

ए टी आइ सी के उत्पादों की बिक्री और सेवाओं के माध्यम से अप्रैल-जून, 2017 के दौरान 55,327 रुपए के राजस्व का उत्पादन किया गया। इस अवधि के दौरान 1092 आगंतुकों को प्रौद्योगिकी सलाह सेवाएं प्रदान की गयी और प्रवेश शुल्क के रूप में 15,700 रुपए प्राप्त हुए।

समुद्री संवर्धन प्रशिक्षण

वैरावल अनुसंधान केन्द्र द्वारा गुजरात राज्य मात्स्यिकी विभाग द्वारा नामित किए गए सूरत जिले के 20 मछुआरों और उद्यमियों के लिए दिनांक 8 से 13 मई, 2017 के दौरान 'खुला सागर मछली पालन' विषय पर व्यावहारिक प्रशिक्षण आयोजित किया गया।

खुला सागर मछली पालन स्थान पर प्रशिक्षणार्थी



जर्नल क्लब

मुख्यालय में डॉ. आर. नारायणकुमार, प्रधान वैज्ञानिक एवं अध्यक्ष, समाज आर्थिक मूल्यांकन और प्रौद्योगिकी हस्तांतरण प्रभाग, भा कृ अनु प-सी एम एफ आर आइ ने दिनांक 6 मई, 2017 को 'आर्थिक विकास संकेतक: किस स्तर तक बोधगम्य है?' विषय पर व्याख्यान दिया।

टूटिकोरिन अनुसंधान केन्द्र में दिनांक 6 जून, 2017 को 'भौगोलिक तापन और जलवायु परिवर्तन' विषय पर व्याख्यान आयोजित किया गया। डॉ. (प्रोफसर) नम्मलवार, भूतपूर्व प्रधान वैज्ञानिक, भा कृ अनु प-सी एम एफ आर आइ तथा परियोजना सलाहकार / अतिथि संकाय सदस्य, अन्ना विश्वविद्यालय, चेन्नई ने व्याख्यान दिया।

विश्वजम अनुसंधान केन्द्र में डॉ. जी. गोपकुमार, एमरिटस वैज्ञानिक, भा कृ अनु प-सी एम एफ आर आइ ने दिनांक 20 मार्च, 2017 को 'समुद्री संवर्धन में आधुनिक विकास' विषय पर और डॉ. एम.के. अनिल ने दिनांक 1 अप्रैल, 2017 को 'आर ए एस व्यवस्था और इसके गुण' विषय पर व्याख्यान दिए।

पुरस्कार

डॉ. के.के. जोषी, अध्यक्ष, समुद्री जैवप्रौद्योगिकी प्रभाग को प्रतिष्ठित केरल राज्य जैवविविधता बोर्ड (के एस बी बी) द्वारा स्थापित वर्ष 2016 का उत्कृष्ट जैवविविधता अनुसंधानकार पुरस्कार प्राप्त हुआ। केरल में मछलियों के वर्गीकरण और समुद्री जैवविविधता का मूल्यांकन के क्षेत्र में उनके अनुसंधान एवं विकास के कार्यों की मान्यता के रूप में पुरस्कार प्रदान किया गया। श्री पिणरायी विजयन, केरल के मुख्य मंत्री ने दिनांक 22 मई, 2017 को के एस बी बी द्वारा तिरुवनंतपुरम में आयोजित अंतर्राष्ट्रीय जैवविविधता दिवस समारोह में डॉ. के.के. जोषी को पुरस्कार प्रदान किया।



केरल के मुख्य मंत्री श्री पिणरायी विजयन से डॉ. जोषी पुरस्कार प्राप्त करते हुए



आइ ए आर आइ, नई दिल्ली में 25-29 अप्रैल, 2017 के दौरान आयोजित भा कृ अनु प अंतर ज्ञोन खेलकूद मीट के विजेताओं को मुम्बई अनुसंधान केन्द्र में सम्मानित किया गया।

टाइप-III क्वार्टरों का उद्घाटन

डॉ. ए. गोपालकृष्णन, निदेशक, भा कृ अनु प-सी एम एफ आर आइ ने मंडपम क्षेत्रीय केन्द्र में 10 जून, 2017 को टाइप-III क्वार्टरों का उद्घाटन किया।



प्रोफसर ए.के. कुमारगुरु, भूतपूर्व कुलपति, मनोन्मणियन सुन्दरनार विश्वविद्यालय, तिरुनेलवेली तथा भूतपूर्व वरिष्ठ प्रोफसर एवं अध्यक्ष, मदुरै कामराज विश्वविद्यालय, मदुरै ने दिनांक 5 जून, 2017 को वर्ष 2017-18 के लिए एमरिटस फेलो (विश्वविद्यालय अनुदान आयोग) के रूप में भा कृ अनु प-सी एम एफ आर आइ के मंडपम क्षेत्रीय केन्द्र में कार्यग्रहण किया।

मुख्यालय, कोच्ची श्री मानस चौधरी, उप सलाहकार, नीति आयोग, भारत सरकार ने 27 जून, 2017 को भा कृ अनु प-सी एम एफ आर आइ का दौरा किया और डॉ. ए. गोपालकृष्णन, निदेशक, भा कृ अनु प-सी एम एफ आर आइ के साथ चर्चा की।

मांगलूर अनुसंधान केन्द्र

- डॉ. जयकृष्ण जेना, उप महानिदेशक (मात्स्यिकी), भा कृ अनु प, नई दिल्ली ने दिनांक 10 अप्रैल, 2017 को केन्द्र का दौरा किया।
- माननीय सांसद श्री नलिन कुमार कटील, श्री मेघराज जैन, डॉ. (प्रोफसर) तपस मंडल और श्री बदरुद्देसा खान ने दिनांक 29 अप्रैल, 2017 को केन्द्र का दौरा किया।

- डॉ. टी. जानकीराम, सहायक महानिदेशक (वनस्पति विज्ञान) एवं डॉ. पी. प्रवीण, सहायक महानिदेशक (समुद्री मात्स्यिकी), भा कृ अनु प, नई दिल्ली ने दिनांक 29 अप्रैल, 2017 को केन्द्र का दौरा किया।

- श्री ए. पद्मय्या नाइक, निदेशक, वाटर शेड (डी आइ सी) विकास विभाग, बंगलूरु ने 29 अप्रैल, 2017 को केन्द्र का दौरा किया।

विषिजम अनुसंधान केन्द्र

- डॉ. शशि तरूर, सांसद, तिरुवनंतपुरम ने 22 अप्रैल, 2017 को केन्द्र का दौरा किया।
- डॉ. इयान डब्लियु. लो, प्रधान वैज्ञानिक, अंतर्राष्ट्रीय आलू केन्द्र, नैरोबी, केनिया ने 18 मई, 2017 को केन्द्र का दौरा किया।

कारवार अनुसंधान केन्द्र

- डॉ. आन्सी मात्यु, मात्स्यिकी अनुसंधान अन्वेषण अधिकारी, डी ए डी एफ, कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय ने 17 मई, 2017 को केन्द्र का दौरा किया।

मुम्बई अनुसंधान केन्द्र

- डॉ. पी. प्रवीण, सहायक महानिदेशक (मात्स्यिकी), श्रीमती सीमा चोपड़ा, निदेशक (रा भा) और श्री मनोजकुमार, ए सी टी ओ (हिन्दी), भा कृ अनु प, नई दिल्ली ने दिनांक 1 मई, 2017 को केन्द्र का दौरा किया।
- श्रीमती उज्ज्वला पाटील, महाराष्ट्र मछीमार कृति समिति की प्रतिनिधि ने 5 मई, 2017 को केन्द्र का दौरा किया।

विश्व पर्यावरण दिवस 2017 समारोह

विश्व पर्यावरण दिवस 2017 का विषय 'प्रकृति से लोगों को जोड़ना' या और विभिन्न क्षेत्रीय अनुसंधान केन्द्रों में 5 जून, 2017 को इसे मनाया गया। मुख्यालय में मात्स्यिक पर्यावरण प्रबंधन प्रभाग (एफ ई एम

पर चेरानेल्लूर पंचायत के विभिन्न स्थानों में प्रशिक्षण आयोजित किया गया। एरणकुलम जिला निवासी समूह एपेक्स काउन्सिल (ई डी आर ए ए सी) के सहयोग से कार्यक्रम आयोजित किया गया और

की प्रधानता और गैर-अवक्रमणीय वस्तुओं का उपयोग कम करने के संबंध में व्याख्यान दिया। एल ई डी बल्ब संयोजन पर श्री पी.एस. अनिलकुमार, डॉ. डी. प्रेमा, श्रीमती लावण्या रतीश, श्री ज़ेबान जोण



मुख्यालय में कपड़े की थालियों के निर्माण पर प्रशिक्षण



विषिजम अनुसंधान केन्द्र में पौधा रोपण

डी) द्वारा बिजली ऊर्जा परिरक्षण हेतु एल ई डी बल्ब संयोजन और प्लास्टिक थैलियों का उपयोग कम करने हेतु पर्यावरण अनुकूल थैलियों के निर्माण

कुल 16 निवासी समूहों ने कार्यक्रम में भाग लिया। डॉ. वी. कृपा, अध्यक्ष, एफ ई एम डी ने जलवायु परिवर्तन के रोक-थाम करने के लिए ऊर्जा संरक्षण

और श्री वैशाखन द्वारा और पर्यावरण अनुकूल थैली निर्माण में सुश्री तनसीम (एस एच जी संकाय सदस्य) और श्रीमती शैलजा, श्रीमती शालिनी और श्रीमती एम.पी. श्यामला द्वारा प्रशिक्षण दिया गया। एस.एन. कॉलेज, नाट्टिका, तृशूर में कॉलेज के प्रकृति क्लब, जैवविविधता क्लब, एन एस एस, एन सी सी और भूमित्रसेना जैसे विभिन्न विभागों और विज्ञान प्रौद्योगिकी एवं पर्यावरण की केरल राज्य परिषद के सहयोग से 20 जून, 2017 को आयोजित कार्यक्रम में डॉ. वी. कृपा ने 'तटीय आवास तंत्र में जलवायु परिवर्तन का प्रभाव' विषय पर व्याख्यान दिया। विषिजम और कारवार अनुसंधान केन्द्रों में सभी कर्मचारियों के सहयोग से पौधों का रोपण किया गया। मुम्बई अनुसंधान केन्द्र के कर्मचारियों, बोम्बे नगरपालिका निगम (बी एम सी) और स्थानीय निवासियों के सहयोग से 5 जून, 2017 को समुद्र तट की सफाई की गयी।



विश्व पर्यावरण दिवस में मुम्बई के समुद्री तट की सफाई

अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस मनाया गया

भा कृ अनु प-केन्द्रीय समुद्री मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान (सी एम एफ आर आइ) में मनोरंजन क्लब द्वारा 21 जून, 2017 को योग के प्रदर्शन के साथ अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस मनाया गया और इस दौरान योग की जानकारी पर व्याख्यान भी आयोजित किया

गया। डॉ. (मेजर) राजेश नम्बीशन कार्यक्रम में मुख्य अतिथि रहे। श्री के. विजयकुमार, आर्ट ऑफ लिविंग के श्री श्री योग के संकाय सदस्य ने भा कृ अनु प-सी एम एफ आर आइ, भा कृ अनु प-सी आइ एफ आर आइ और भा कृ अनु प-एन बी एफ जी आर

के कर्मचारी सदस्यों के लिए योग का प्रदर्शन किया। करीब 250 कर्मचारी सदस्यों ने कार्यक्रम में भाग लिया। सभी क्षेत्रीय अनुसंधान केन्द्रों में भी योग दिवस मनाया गया जिसमें योग की तकनीकों में प्रवीण व्यक्तियों ने कर्मचारियों के हितार्थ योग के सिद्धांतों और व्यावहारिक प्रयोग पर व्याख्यान दिए।



स्वच्छ भारत अभियान की गतिविधियाँ

मुख्यालय और क्षेत्रीय अनुसंधान केन्द्रों में 16-31 मई, 2017 के दौरान स्वच्छ भारत पखवाड़ा मनाया गया। मुख्यालय में दिनांक 22 मई, 2017 को स्वच्छ भारत अभियान की समिति की बैठक आयोजित की गयी। मंडपम क्षेत्रीय केन्द्र में सभी कर्मचारियों के सक्रिय सहयोग से कार्यालय परिसर में जल स्रोत / भूजल स्रोत समाप्त करने वाले 'सीमै करुवालेम' (प्रोसोपिस जूलिफ्लोरा) के उन्मूलन का अभियान आयोजित किया गया। मुम्बई अनुसंधान केन्द्र में कर्मचारियों के सहयोग से कार्यालय परिसर और समीपस्थ पुलिनों की सफाई की गयी। विभिन्न अनुसंधान केन्द्र में कर्मचारियों के सहयोग से खाद

के गड्डे (कंपोस्ट पिट) का निर्माण और कार्यालय परिसर की सफाई की गयी। मद्रास अनुसंधान केन्द्र, चेन्नई में स्वामी परमसुखानन्द, श्रीरामकृष्ण मठ, चेन्नई द्वारा 11 अप्रैल, 2017 को 'मन, शरीर और पर्यावरण की स्वच्छता की प्रधानता' विषय पर आमंत्रित व्याख्यान आयोजित किया गया। चित्र नीलंकरे पुलिन में दिनांक 15 अप्रैल, 2017 को नीलंकरे के प्री-लैनिंग स्कूल के छात्रों के साथ आयोजित 'नम्मा बीच नम्मा चेन्नई' (हमारा पुलिन हमारा चेन्नई) कार्यक्रम में कर्मचारियों ने सहयोग दिया और इसके बाद जानकारी कार्यक्रम भी हुआ। प्रोफसर के.वल्लियप्पन, टी एन ए यु सूचना एवं



मुम्बई अनुसंधान केन्द्र में स्वच्छता अभियान

विपणन केन्द्र ने 26 मई, 2017 को कचरा प्रबंधन पर जानकारी कार्यक्रम आयोजित किया गया।



मद्रास अनुसंधान केन्द्र में आयोजित अभियान



विभिन्न अनुसंधान केन्द्र में कंपोस्ट पिट निर्माण का दृश्य

विश्व महासागर दिवस हमारे महासागर हमारा भविष्य समग्र विषय के रूप में 8 जून, 2017 को विश्व महासागर दिवस मनाया गया और स्वास्थ्यपूर्ण महासागर और बेहतर भविष्य के लक्ष्यार्थ में विविध कार्यक्रम आयोजित किए गए। टूटिकोरिन अनुसंधान केन्द्र द्वारा इनिगो नगर, तूतुकुडी में प्लास्टिक प्रदूषण को केन्द्रित करते हुए समुद्र तट सफाई कार्यक्रम आयोजित किया गया। इसी तरह एन जी ओ आनमप्रेम द्वारा वेसोवा समुद्र तट में आयोजित कार्यक्रम में भा कृ अनु प-सी एम एफ आर आइ के कर्मचारियों ने भाग लिया।



विश्व महासागर दिवस में तूतुकुडी समुद्र तट की सफाई का दृश्य

संसदीय राजभाषा समिति निरीक्षण

संसदीय राजभाषा समिति की दूसरी उपसमिति द्वारा भा कृ अनु प-सी एम एफ आर आइ के मुम्बई अनुसंधान केन्द्र में दिनांक 3 मई, 2017 को राजभाषा कार्यान्वयन की गतिविधियों का निरीक्षण किया गया। डॉ. सत्यनारायण जाटिया, सांसद (राज्य सभा) एवं

समिति के उपाध्यक्ष ने निरीक्षण बैठक की अध्यक्षता की। रहे। डॉ. प्रसन्न कुमार पटसाणी, सांसद (लोक सभा), डॉ. सुनिल बलिराम गायकवाड़, सांसद (लोक सभा), श्री लक्ष्मी नारायण यादव, सांसद (लोक सभा), श्रीमती अभिलाषा मिश्रा, हिन्दी अधिकारी,

श्री निखिल अरोरा, वरिष्ठ अनुवादक और श्रीमती नीरजा, अनुसंधान सहायक, समिति सचिवालय भी उपस्थित थे। डॉ. प्रवीण पी., सहायक महा निदेशक (समुद्री मात्स्यिकी), श्रीमती सीमा चोपड़ा, निदेशक (रा भा), श्री मनोज कुमार, ए सी टी ओ (हिन्दी), भा कृ अनु प, डॉ. पी. विजयगोपाल, प्रधान वैज्ञानिक, श्री सी. मुरलीधरन, मुख्य प्रशासनिक अधिकारी, श्री नवीन कुमार यादव, सहायक निदेशक (रा भा) और श्रीमती ई.के. उमा, ए सी टी ओ (हिन्दी), सी एम एफ आर आइ, कोच्ची और डॉ. वीरेन्द्र वीर सिंह, प्रभारी वैज्ञानिक, डॉ. (श्रीमती) अनुलक्ष्मी चेल्लप्पन, वैज्ञानिक और डॉ. रतीश कुमार, वैज्ञानिक, मुम्बई अनुसंधान केन्द्र भी बैठक में उपस्थित थे।



संसदीय राजभाषा समिति निरीक्षण के बाद दस्तावेज सौंपने का दृश्य

- मांगलूर अनुसंधान केन्द्र को भारत सरकार की राजभाषा नीति के कार्यान्वयन एवं सरकारी कामकाज में हिन्दी के प्रयोग को बढ़ावा देने के लिए नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति का पुरस्कार प्राप्त हुआ।
- कारवार अनुसंधान केन्द्र को राजभाषा हिन्दी के प्रभावकारी कार्यान्वयन के लिए लगातार दूसरी बार वर्ष 2016-2017 की रोलिंग ट्रॉफी प्राप्त हुई। कारवार नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की दिनांक 30 जून, 2017 को आयोजित

45वीं अर्धवार्षिक बैठक में श्री टेकचन्द, उप निदेशक (कार्यान्वयन) बंगलूरु से श्रीमती सलोनी शिवम, वैज्ञानिक और श्री नारायण जी. वैद्या, वरिष्ठ तकनीकी अधिकारी ने रोलिंग ट्रॉफी तथा प्रमाण पत्र प्राप्त किए।

- डॉ. एस. जास्मिन, प्रधान वैज्ञानिक विपिंजम अनुसंधान केन्द्र ने तिरुवनंतपुरम में 30 जून, 2017 को आयोजित नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक में भाग लिया।

हिन्दी कार्यशालाएं

मुख्यालय कोच्ची में दिनांक 17 जून, 2017 को आयोजित हिन्दी टंकण की कार्यशाला में कुल 15 अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने भाग लिया।

विपिंजम अनुसंधान केन्द्र में दिनांक 29 जून, 2017 को हिन्दी कार्यशाला आयोजित की गयी। श्री के.गोपकुमार, सदस्य, केरल हिन्दी प्रचार सभा, तिरुवनंतपुरम ने व्याख्यान दिया।



श्री उपेन्द्र कुमार, मांगलूर अनुसंधान केन्द्र पुरस्कार प्राप्त करने का दृश्य



कारवार अनुसंधान केन्द्र को पुरस्कार प्रदान करने का दृश्य



विपिंजम अनुसंधान केन्द्र में हिन्दी कार्यशाला का दृश्य

श्री नवीन कुमार यादव, सहायक निदेशक (रा भा) ने दिनांक 22 मई, 2017 को मंडपम क्षेत्रीय केन्द्र के राजभाषा कार्यान्वयन का और दिनांक 9 जून, 2017 को विपिंजम अनुसंधान केन्द्र की राजभाषा गतिविधियों का निरीक्षण किया।

हितधारकों की बैठक का आयोजन



कारवार अनुसंधान केन्द्र में हितधारकों की बैठक



विषिजम अनुसंधान केन्द्र में हितधारकों की बैठक

भा कृ अनु प-सी एम एफ आर आइ के कारवार अनुसंधान केन्द्र में दिनांक 8 मई, 2017 को आयोजित हितधारकों की बैठक में उद्यमियों, मछुआरों, किसानों और केन्द्र के सभी वैज्ञानिकों और तकनीकी कर्मचारियों ने भाग लिया। पिंजरा में पालन करके मछली उत्पादन बढ़ाए जाने और तटीय समुदाय के लोगों की आय बढ़ाए जाने के उपाय तथा मछली और कवच मछली पालन से जुड़ी हुई सामान्य समस्याओं के बारे में चर्चा की गयी। डॉ. के.के. फिलिपोस, प्रभारी वैज्ञानिक ने अपने भाषण में केन्द्र की प्रमुख कार्यविधियों के बारे में संक्षिप्त विवरण दिया और उत्तरकन्नड जिले में समुद्री संवर्धन कार्यविधियों के विकास की आवश्यकता के बारे में बताया। उत्तरकन्नड में पिंजरा मछली पालन के विकास में राज्य सरकार और स्वयं सहायक ग्रुपों की भूमिका के बारे में भी स्थानीय लोगों के बीच चर्चा की गयी।

विषिजम अनुसंधान केन्द्र में दिनांक 9 मई, 2017 को आयोजित हितधारकों की बैठक में कुल 44 मछुआरों, स्वयं सहायता समूहों और गैर सरकारी संगठनों ने भाग लिया। मंडपम क्षेत्रीय केन्द्र में दिनांक 11 मई, 2017 को हितधारकों की बैठक आयोजित की गयी, जिस में पिंजरा मछली पालन, अलंकारी मछली पालन और महा चिंगट के वजन बढ़ाव में लगे हुए व्यक्तियों सहित 30 मछुआरों के अतिरिक्त राज्य मात्स्यिकी विभाग के अधिकारियों ने भी भाग लिया। मद्रास अनुसंधान केन्द्र द्वारा प्रबंधक, मद्रास मत्स्यन पाताश्रय प्रबंध समिति कार्यालय, चेन्नई में

दिनांक 17 अप्रैल, 2017 को हितधारकों की बैठक आयोजित की गयी। मछुआरों के नेता गण, एम पी ई डी ए, एफ एस आइ, सी आइ एफ एन ई टी, तमिलनाडु मात्स्यिकी विभाग के प्रतिनिधियों और भा कृ अनु प-सी एम एफ आर आइ के वैज्ञानिकों एवं तकनीकी कर्मिकों ने बैठक में भाग लिया।

वेरावल क्षेत्रीय केन्द्र में यह बैठक दिनांक 6 मई को आयोजित की गयी। इस अवसर पर श्री एन.आर. पटेल, उप आयुक्त, मात्स्यिकी विभाग, गुजरात सरकार, श्री जगदीशभाय फोफान्डी, वेरावल पटान नगरपालिका का अध्यक्ष, श्री लखनभाय भेनसला, भारतीय समुद्री खाद्य निर्यात संघ का गुजरात क्षेत्र, श्री आर.ए. गुप्ता, उप निदेशक, एम पी ई डी ए, श्री तुलसीभाय गोहेल, नाव मालिक

संघ, वेरावल का अध्यक्ष, श्री गोहेल विशाल चन्द्रा, परियोजना समन्वयक, विश्व वन्य जीव निधि, डॉ. जी.के. शिवरामन, प्रभारी वैज्ञानिक, भा कृ अनु प-सी आइ एफ टी, सी एम एफ आर आइ तथा सी आइ एफ टी के वैज्ञानिक, मछुआरा समुदाय और मछुआरा सहकारी संघों के प्रतिनिधियों तथा अन्य सरकारी कर्मिकों ने भाग लिया। इस दौरान टोकन व्यवस्था के आधुनिकीकरण, जालाक्षि आकार का नियमन, प्रकाश मत्स्यन, समुद्री सुरक्षा के उपाय, पोत निगरानी की व्यवस्थाएं, पकड़ी गयी मछलियों में मूल्य वर्धन और गुजरात समुद्री मात्स्यिकी विनियमन अधिनियम में संशोधन की आवश्यकता जैसे समकालीन मामलों पर हितधारकों के साथ चर्चा की गयी।



वेरावल क्षेत्रीय केन्द्र में हितधारकों की बैठक

समुद्री शैवाल पैदावार पर बुद्धिशीलता (ब्रेइन स्टोर्मिंग) सत्र

भा कृ अनु प-सी एम एफ आर आइ के वेरावल क्षेत्रीय केन्द्र में दिनांक 9 मई, 2017 को 'गुजरात में समुद्री शैवाल पैदावार और इसकी उपयोगिता' विषयक बुद्धिशीलता सत्र आयोजित किया गया। इसमें भा कृ अनु प-सी एम एफ आर आइ, भा कृ अनु प-सी आइ एफ टी, सी एस आइ आर-केन्द्रीय लवण एवं समुद्री रसायन अनुसंधान केन्द्र, भावनगर, भा कृ अनु प-मुंगफली अनुसंधान निदेशालय के वैज्ञानिकों और मात्स्यिकी विभाग के कर्मिकों, जुनगढ़ कृषि विश्वविद्यालय और कामधेनु विश्वविद्यालय, अहम्मदाबाद के मात्स्यिकी संकाय सदस्यों, गुजरात के तटीय भागों में समुद्री शैवाल का पैदावार करने वाले व्यक्तियों और कुछ गैर सरकारी संगठनों ने भाग लिया।

स्वच्छ भारत अभियान कार्यक्रम के अंतर्गत मछली अपशिष्ट का वैज्ञानिक उपयोग

कृषि विज्ञान केन्द्र द्वारा एरणाकुलम मछली बाज़ार में दिनांक 17 मई 2017 को स्वच्छता जानकारी कार्यक्रम आयोजित किया गया। श्रीमती पी. श्रीलता, एस एम एस (गृह विज्ञान) ने कार्यक्रम का नेतृत्व किया और अन्य कर्मचारियों ने सक्रिय सहयोग दिया। स्थानीय मछली बाज़ार से मछली का अपशिष्ट इकट्ठा करके मुलवुकाड सेटलाइट उर्वरक उत्पादन



जैविक खाद उत्पादन के लिए मछली अपशिष्ट का संग्रहण

इकाई (एस एम पी यु) में लाने के बाद मछली अपशिष्ट एवं कयर पिथ कम्पोस्ट उर्वरक के लिए उपयोग किया जाता है। इस तरह बनाए गए उर्वरक

‘फिशलाइज़र’ को 200 कि.ग्रा. की थैलियों में भरकर के वी के विपणन काउन्टर द्वारा बेचा जाता है, लोगों के बीच इसकी काफी मांग है।

सैटेलाइट जैविक जैव-इनपुट पैकिंग इकाई का प्रचालन



सैटेलाइट जैविक जैव-इनपुट पैकिंग इकाई का उद्घाटन

उप-जेल, एरणाकुलम में दिनांक 11 मई, 2017 को निदेशक, एस आइ सी ए एवं डी आइ जी ऑफ प्रिंसिपल्स (दक्षिण क्षेत्र), प्रदीप बी द्वारा कृषि विज्ञान केन्द्र के सैटेलाइट जैविक जैव-इनपुट पैकिंग इकाई के प्रचालन का उद्घाटन किया गया। एरणाकुलम उप-जेल अधीक्षक श्री सोमराजन के., कोच्ची

नगरपालिका निगम वार्ड काउन्सिलर श्रीमती ग्रेसी बाबु और कृ वि कें अध्यक्ष डॉ. षिनोज सुब्रमण्यन भी उपस्थित थे। विषय विशेषज्ञ श्री एफ. पुष्पराज एंजलो (कृषि विस्तार) और डॉ. पी.ए. विकास (मात्स्यिकी) ने जेल वासियों के लिए क्षमता वर्धन पर व्याख्यान दिया।

मैंग्रोव वनरोपण अभियान

कृषि विज्ञान केन्द्र के नारकल स्थित परिसर में विश्व पर्यावरण दिवस दिनांक 5 जून, 2017 को मैंग्रोव वनरोपण कार्यक्रम आयोजित किया गया। कृषि विज्ञान केन्द्र के सभी कर्मचारियों ने इस कार्यक्रम

में सक्रिय रूप से भाग लिया और समुद्र के सामने के परिसर में मैंग्रोव ब्रुगेरिया जिम्नोराइज़ा और राइज़ोफोरा एपिकुलेटा का रोपण किया गया।

मात्स्यिकी विज्ञान
के क्षेत्र में वर्ष
1954 से लेकर
प्रमुख इंडियन जर्नल
ISSN 0970-6011

ISSN 0970 - 6011 Volume 39, Number 4, 2012

Indian Journal of Fisheries

Indian Council of Agricultural Research
Published by The Director
Central Marine Fisheries Research Institute
Cochin - 682 018, Kerala, India
www.icar.org.in

वार्षिक चंदा रु:
₹ 1000 \$100
निदेशक, सी एम एफ आर आइ
कोच्ची - 682 018 से संपर्क करें
इन्टरनेशनल इंपैक्ट फैक्टर 0.195
एन ए ए एस रेटिंग 6.2

भा कृ अनु प-सी एम एफ आर आइ में कार्य दलों का गठन

संस्थान की अनुसंधान समिति बैठक की 25वीं बैठक में लिए गए निर्णयों के अनुसार 43 संपदा आधारित राष्ट्रीय मछली स्टॉक निर्धारण कार्य दलों (I-IV) का गठन किया गया। इसके अतिरिक्त 28 संपदा / विषय आधारित राष्ट्रीय कार्य दलों (V-IX) का गठन किया गया। स्टॉक निर्धारण कार्य दल क्षेत्रीय जीवसंख्या प्राचलों के मान्यकरण और पख मछलियों तथा कवच मछलियों के स्टॉक निर्धारण पर ध्यान देंगे। संपदा/विषय आधारित राष्ट्रीय कार्य दल विषय पर उपलब्ध सूचनाओं की कोष के रूप में कार्य करेंगे।

संपदा / विषय क्षेत्र	राष्ट्रीय कार्य दल (एन डब्लियु जी)	एन डब्लियु जी नेता
मछली स्टॉक निर्धारण कार्य दल		
I. वेलापवर्ती मात्स्यिकी संपदाएं		
तारली (सारडिनेल्ला लॉर्गिसेप्स, सारडिनेल्ला गिबोसा)	डॉ. के.एम. राजेश डॉ. यु. गंगा	डॉ. एम. शिवदास
बांगडा (रास्ट्रेलिंगर कानागुटी)	डॉ. सी. अनुलक्ष्मी डॉ. ए. मागरेट मुत्तुरत्तिनम	डॉ. यु. गंगा
ट्यूना (सभी प्रजातियाँ)	डॉ. ई.एम. अब्दुसमद, डॉ. शुभदीप घोष	डॉ. प्रतिभा रोहित
बिलफिशस (इस्त्रियोफोरस प्लाटिटीरस इस्त्रियोमैक्स इंडिका)	डॉ. एम. शिवदास, डॉ. यु. गंगा	डॉ. शुभदीप घोष
सुरमई (स्कोम्बरोमोरस कम्मेर्सेन, स्कोम्बरोमोरस गट्टाटस)	श्री के. मोहम्मद कोया, डॉ. एम. शिवदास	श्री के.पी. सैद कोया
कोबिया (राचिसेंटन कनाडम)	श्री के. मोहम्मद कोया, डॉ. प्रतिभा रोहित	डॉ. ए. मागरेट मुत्तुरत्तिनम
करंजिड्स (कैरेंक्स इन्नोबिलिस, सेलर कुमनोफताल्मस, डेकाटीरस रस्सेली, मेगालासियस कोडाइला परस्ट्रोमाटियस नीगर)	डॉ. एम. शिवदास, डॉ. के.एम. राजेश	डॉ. ई.एम. अब्दुसमद
फीतामीन (ट्राइक्यूरस लेप्ट्यूरस)	श्री के. मोहम्मद कोया, डॉ. यु. गंगा	डॉ. के.एम. राजेश
ऐंचोवी (स्टोलिफोरस डेविसी, स्टोलिफोरस वेइटी, स्टोलिफोरस इंडिकस, कोइलिया डसुमेरी)	डॉ. प्रतिभा रोहित, श्री के.पी. सैद कोया	डॉ. सी. अनुलक्ष्मी
बम्बिल (हार्पडोन नेहेरियस)	डॉ. सी. अनुलक्ष्मी, डॉ. शुभदीप घोष	श्री के. मोहम्मद कोया
माही-माही (कोरिफोना हिप्प्यूरस)	डॉ. के.एम. राजेश, श्री के.पी. सैद कोया	डॉ. ई.एम. अब्दुसमद डॉ. प्रतिभा रोहित
II. तलमज्जी मात्स्यिकी संपदाएं		
इलास्मोब्रांक्स	डॉ. सुजिता तोमस, डॉ. पी.पी. मनोजकुमार डॉ. रेखा जे. नायर, डॉ. टी.एम. नजमुदीन श्रीमती मुक्ता मेनोन, डॉ. स्वाति प्रियंका सेन डॉ. के.वी. अखिलेश	डॉ. शोभा जो किषकूडन
गूपर	डॉ. पी.पी. मनोजकुमार, डॉ. जी.बी. पुरुषोत्तमा डॉ. शोभा जो किषकूडन, श्रीमती मुक्ता मेनोन, डॉ. स्वाति प्रियंका सेन, श्री अम्बरीश पी. गोप	डॉ. रेखा जे. नायर
स्नेपर	डॉ. शोभा जो किषकूडन, डॉ. रेखा जे. नायर, डॉ. पी.पी. मनोजकुमार, डॉ. स्वाति प्रियंका सेन, श्रीमती लिवी विल्सन	श्रीमती मुक्ता मेनोन
पिगफेस ब्रीम	डॉ. शोभा जो किषकूडन, डॉ. पी.पी. मनोजकुमार, श्रीमती मुक्ता मेनोन, डॉ. स्वाति प्रियंका सेन	डॉ. टी.एम. नजमुदीन
सूत्रपख ब्रीम	डॉ. पी.पी. मनोजकुमार, डॉ. सुजिता तोमस, डॉ. शोभा जो किषकूडन, श्रीमती मुक्ता मेनोन, डॉ. जी.बी. पुरुषोत्तमा, डॉ. स्वाति प्रियंका सेन, डॉ. के.वी. अखिलेश, डॉ. महेश वी.	डॉ. पी.यु. ज़क्करिया
सयनिड्स	डॉ. महेश वी., डॉ. रेखा जे. नायर, डॉ. शोभा जो किषकूडन, डॉ. सुजिता तोमस, डॉ. जी.बी. पुरुषोत्तमा, श्रीमती मुक्ता मेनोन, डॉ. स्वाति प्रियंका सेन	डॉ. पी.पी. मनोजकुमार
मुल्लन	डॉ. रेखा जे. नायर, श्रीमती मुक्ता मेनोन, डॉ. पी.पी. मनोजकुमार, श्रीमती रम्या एल.	डॉ. शोभा जो किषकूडन
तुम्बिल	श्रीमती मुक्ता मेनोन, डॉ. शोभा जो किषकूडन, डॉ. सुजिता तोमस, डॉ. जी.बी. पुरुषोत्तमा, डॉ. पी.पी. मनोजकुमार, डॉ. स्वाति प्रियंका सेन, डॉ. के.वी. अखिलेश, श्रीमती रम्या एल., श्री अम्बरीश पी.गोप, डॉ. महेश वी.	डॉ. टी.एम. नजमुदीन
गोटफिश	डॉ. शोभा जो किषकूडन, डॉ. पी.यु. ज़क्करिया डॉ. स्वाति प्रियंका सेन	श्रीमती मुक्ता मेनोन
चपटी मछली	डॉ. रेखा जे. नायर, डॉ. महेश वी. डॉ. शोभा जो किषकूडन, डॉ. सुजिता तोमस, डॉ. स्वाति प्रियंका सेन, श्रीमती मुक्ता मेनोन, डॉ. जी.बी. पुरुषोत्तमा	डॉ. पी.पी. मनोजकुमार

संपदा / विषय क्षेत्र	राष्ट्रीय कार्य दल (एन डब्लियु जी)	एन डब्लियु जी नेता
शिंगटी	डॉ. रेखा जे. नायर, डॉ. शोभा जो किषकूडन, डॉ. सुजिता तोमस, डॉ. के.वी. अखिलेश, श्रीमती मुक्ता मेनोन, डॉ. स्वाति प्रियंका सेन	डॉ. जी.बी. पुरुषोत्तमा
पाम्फ्लेट	डॉ. टी.एम. नजमुद्दीन, डॉ. स्वाति प्रियंका सेन, डॉ. जी.बी. पुरुषोत्तमा, डॉ. शोभा जो किषकूडन, श्रीमती मुक्ता मेनोन, डॉ. के.वी. अखिलेश	डॉ. सुजिता तोमस
श्वेत मछली	डॉ. शोभा जो किषकूडन, डॉ. स्वाति प्रियंका सेन, डॉ. टी.एम. नजमुद्दीन, डॉ. के.वी. अखिलेश, डॉ. महेशा वी.	डॉ. सुजिता तोमस
सूत्रपत्र	डॉ. जी.बी. पुरुषोत्तमा, श्रीमती मुक्ता मेनोन	डॉ. स्वाति प्रियंका सेन
प्रियाकान्तिड	डॉ. पी.यु. जक्करिया, डॉ. सुजिता तोमस, डॉ. स्वाति प्रियंका सेन, डॉ. के.वी. अखिलेश	श्रीमती लिवी विल्सन
ईल	डॉ. टी.एम. नजमुद्दीन, डॉ. पी.पी. मनोजकुमार, डॉ. सुजिता तोमस, डॉ. जी.बी. पुरुषोत्तमा, डॉ. शोभा जो किषकूडन,	डॉ. स्वाति प्रियंका सेन
फ्लेटहेड	डॉ. पी.यु. जक्करिया, डॉ. सुजिता तोमस	श्रीमती मुक्ता मेनोन
बालिस्टिड	डॉ. शोभा जो किषकूडन, श्रीमती मुक्ता मेनोन, श्री अम्बरीश पी. गोप, श्रीमती लिवी विल्सन	डॉ. के.वी. अखिलेश
III. क्रस्टेशियन मात्स्यिकी संपदाएं		
किड्डी थ्रिप (पारापेनियोप्सिस स्टाइलिफेरा)	डॉ. ज्ञान रंजन दास, डॉ. आर. रतीश कुमार, डॉ. ए.पी. दिनेशबाबु, डॉ. एस. लक्ष्मी पिल्लै, श्रीमती इंदिरा दिविपाला	डॉ. पी.टी. शारदा
स्पेकिल्ड थ्रिप (मेटापेनिस मोनोसिरस)	डॉ. ज्ञान रंजन दास, डॉ. आर. रतीश कुमार, डॉ. के.एन. सलीला, डॉ. पी.टी. शारदा, डॉ. एस. लक्ष्मी पिल्लै, श्रीमती इंदिरा दिविपाला	डॉ. ए.पी. दिनेशबाबु
पुष्प पुच्छ चिंगट/ तेल्ली चिंगट कडल चिंगट (मेटापेनिस डोबसोनी)	डॉ. ज्ञान रंजन दास, डॉ. आर. रतीश कुमार, डॉ. ए.पी. दिनेशबाबु, डॉ. पी.टी. शारदा, श्रीमती इंदिरा दिविपाला	डॉ. एस. लक्ष्मी पिल्लै
भारतीय श्वेत झींगा (फेन्नोपेनिस इंडिकस)	डॉ. आर. रतीश कुमार, डॉ. ए.पी. दिनेशबाबु, डॉ. एस. लक्ष्मी पिल्लै, डॉ. के.एन. सलीला, डॉ. पी.टी. शारदा, श्रीमती इंदिरा दिविपाला	डॉ. जी. महेश्वरुडु
हरा पुलि झींगा (पेनिस सेमीसल्केटस)	डॉ. आर. रतीश कुमार, डॉ. जी. महेश्वरुडु, डॉ. पी.टी. शारदा, श्री एम. राजकुमार	डॉ. ज्ञान रंजन दास
चिंगट (प्लोसियोनिका क्वासीग्राण्डिस) हम्मबैक नाइलोन चिंगट (हेटरोकार्पस गिबोसस)	डॉ. पी.टी. शारदा, श्रीमती इंदिरा दिविपाला	डॉ. रेखा देवी चक्रवर्ती
फलवर केकड़ा/ ब्लू स्विम्मर केकड़ा (पोटूनस पेलाजिकस)	डॉ. ज्ञान रंजन दास, डॉ. आर. रतीश कुमार, डॉ. ए.पी. दिनेशबाबु, डॉ. पी.टी. शारदा, श्रीमती इंदिरा दिविपाला, श्री एम. राजकुमार	डॉ. जोसलीन जोस
ब्लड स्पोटड केकड़ा (पोटूनस सांग्विनोलेन्टस)	डॉ. ज्ञान रंजन दास, डॉ. आर. रतीश कुमार, डॉ. ए.पी. दिनेशबाबु, डॉ. पी.टी. शारदा, श्रीमती इंदिरा दिविपाला	डॉ. जोसलीन जोस
क्रिसिफिक्स केकड़ा (चारिबिडिस फेरियाटस)	डॉ. आर. रतीश कुमार, डॉ. जोसलीन जोस	डॉ. ए.पी. दिनेशबाबु
रेती महाचिंगट (थीनस यूनीमैकुलेटस)	डॉ. पी.टी. शारदा, श्रीमती इंदिरा दिविपाला	डॉ. रेखा देवी चक्रवर्ती
शूली महाचिंगट (पानुलिरस पोलीफैगस)	डॉ. आर. रतीश कुमार	डॉ. ज्ञान रंजन दास
IV. मोलस्कन मात्स्यिकी संपदाएं		
शीर्षपाद	डॉ. पी.के. अशोकन, डॉ. गीता शशिकुमार, डॉ. एम.के. अनिल	डॉ. के.एस. मोहम्मद
द्विकपाटी	डॉ. पी.के. अशोकन, डॉ. आइ. जगदीश, डॉ. एम.के. अनिल, डॉ. आर. विद्या	डॉ. गीता शशिकुमार
जठरपाद	डॉ. वी. वेंकटेशन, श्रीमती कविता, श्रीमती जास्मिन	डॉ. आइ. जगदीश
संपदा / विषय पर आधारित कार्य दल		
V. मात्स्यिकी पर्यावरण प्रबंधन प्रभाग		
समुद्री शैवाल	डॉ. रीता जयशंकर, डॉ. वी.वी. सिंह, श्री सुखदाने कपिल, श्री तिरुमलैसेल्वन डॉ. पी.एस. आशा, श्री लवसन एल. एड्वेर्ड, डॉ. बी. जोणसन	डॉ. पी. कलाधरन
समुद्री घास	डॉ. आर. जयभास्करन, श्री तिरुमलैसेल्वन, डॉ. पी.एस. आशा, डॉ. बिन्दु सुलोचनन	डॉ. पी. कलाधरन
मैंग्रोव	डॉ. वी. कृपा, डॉ. पी. कलाधरन, डॉ. बिन्दु सुलोचनन, डॉ. पी.एस. आशा, डॉ. रीता जयशंकर, डॉ. वी.वी. सिंह, डॉ. आर. जयभास्करन, श्री लवसन एल. एड्वेर्ड, श्रीमती रम्या अभिजित	डॉ. डी. प्रेमा

संपदा / विषय क्षेत्र	राष्ट्रीय कार्य दल (एन डब्लियु जी)	एन डब्लियु जी नेता
समुद्री स्तनी	डॉ. वी. कृपा, श्री कपिल सुखदाने, श्री लवसन एल. एड्वर्ड, डॉ. बिन्दु सुलोचनन, डॉ. वी.वी. सिंह	डॉ. आर. जयभास्करन
समुद्री पक्षी	डॉ. विजयकुमारन, डॉ. डी. प्रेमा, श्री कपिल सुखदाने, डॉ. बिन्दु सुलोचनन, श्री तिरुमलैसेल्वन, श्रीमती रम्या अभिजित, श्री लवसन एल. एड्वर्ड	डॉ. आर. जयभास्करन
VI. समुद्री जैवविविधता प्रभाग		
संजस	डॉ. पी. लक्ष्मीलता, डॉ. के.एस. शोभना, डॉ. विनोद के.	डॉ. एल. रंजित
कठोर प्रवाल	डॉ. के.एस. शोभना, डॉ. मिरियम पोल श्रीराम डॉ. श्रीनाथ के.आर.	डॉ. एस. जास्मिन
मृदु प्रवाल	डॉ. जास्मिन एस., डॉ. प्रलय रंजन बेहरा श्री ताराचंद कुमावत	डॉ. के.आर. श्रीनाथ
जेली फिश और अन्य क्रिडेरियन	डॉ. शरवणन आर., डॉ. एल. रंजित सुश्री दिव्या विश्वम्भरन	डॉ. मिरियम पोल श्रीराम
समुद्री ककड़ी और अन्य शूलचर्मी	डॉ. पी. लक्ष्मीलता, सुश्री दिव्या विश्वम्भरन, श्री ताराचंद कुमावत, डॉ. पी.एस. आशा	डॉ. आर. शरवणन
छोटे अकशेरुकी फाइला	डॉ. रामकुमार एस., डॉ. प्रलय रंजन बेहरा, श्री ताराचंद कुमावत	डॉ. मोली वर्गीस
समुद्री घोड़ा और अन्य सिग्नाथिडे	डॉ. के.आर. श्रीनाथ, डॉ. एल. रंजित	डॉ. के. विनोद
VII. मात्स्यिकी जैवप्रौद्योगिकी प्रभाग		
समुद्री सूक्ष्म शैवाल	डॉ. काजल चक्रवर्ती, डॉ. एन.एस. जीना, डॉ. श्रीनिवास राघवन वी., श्रीमती अनुश्री नायर	डॉ. पी. विजयगोपाल
समुद्री माइक्रोब्स	डॉ. एम.ए. प्रदीप, डॉ. सुमित्रा टी.जी., डॉ. एन.के. सनिल, श्रीमती रेश्मा के.जे., सुश्री सलोनी शिवम, डॉ. एम.पी. पोल्टन, सुश्री सैमा रहमान, श्री कुर्वां रघु रमदु	डॉ. एस.आर. कृपेश शर्मा
आनुवंशिकी	डॉ. श्रीनिवास राघवन वी., डॉ. एन.एस. जीना, डॉ. ए. गोपालकृष्णन	डॉ. संध्या सुकुमारन
जीनोमिक्स	श्री एम. शंकर, डॉ. एम. शक्तिवेल डॉ. वी. श्रीनिवास राघवन, डॉ. एन.एस. जीना, डॉ. एम.पी. पोल्टन, डॉ. ए. गोपालकृष्णन	डॉ. एम.ए. प्रदीप
समुद्री जैवपूर्वविक्षण	डॉ. काजल चक्रवर्ती, डॉ. एम.ए. प्रदीप	डॉ. काजल चक्रवर्ती
VIII. समुद्री संवर्धन प्रभाग		
समुद्री अलंकारी मछली पालन	डॉ. बोबी इग्नेशियस, डॉ. ए.के. अब्दुल नाज़र, डॉ. एम.के. अनिल, डॉ. के.के. अनिकुट्टन, श्री एन. राजेश	डॉ. के. मधु
समुद्री कॉपीपोड पालन	डॉ. बिजी सेवियर, डॉ. इमेलडा जोसफ, डॉ. जयश्री लोका, डॉ. के.के. अनिकुट्टन, श्री एन. राजेश	डॉ. बी. संतोष
समुद्री रॉटिफर पालन	डॉ. रितेश रंजन, डॉ. बी. संतोष, डॉ. जयश्री लोका, डॉ. बोबी इग्नेशियस, श्री एन. राजेश	
सूक्ष्म शैवाल पालन	डॉ. रमा मधु, डॉ. बिजी सेवियर, डॉ. के.के. अनिकुट्टन, डॉ. सी. कार्लिदास, डॉ. जयश्री लोका, डॉ. रितेश रंजन	डॉ. षोजी जोसफ
समुद्री पखमछली प्रजनन	डॉ. आर. जयकुमार, डॉ. के. मधु, डॉ. रितेश रंजन, डॉ. एम.के. अनिल, श्रीमती आर. गोमती, श्री अम्बरीश पी गोप डॉ. शेखर मेघराजन, डॉ. जी. तमिलमणी, डॉ. एम. शक्तिवेल, डॉ. टी. सेन्तिल मुरुगन, डॉ. पी.पी. सुरेश बाबु	डॉ. ए.के. अब्दुल नाज़र
समुद्री मछली पालन	डॉ. डी. दिवु, डॉ. जयश्री लोका, डॉ. षोजी जोसफ डॉ. बी. संतोष, डॉ. जो के. किष्कूडन डॉ. शेखर मेघराजन, डॉ. एम. शक्तिवेल, डॉ. आर. जयकुमार, डॉ. ए.पी. दिनेशबाबु, डॉ. सुजिता तोमस	डॉ. इमेलडा जोसफ
IX. समाज आर्थिक मूल्यांकन एवं प्रौद्योगिकी हस्तांतरण प्रभाग		
मात्स्यिकी अनुसंधान का संघात निर्धारण- संस्थान के वित्तीय मूल्य का आकलन	डॉ. श्याम एस. सलिम, डॉ. एन. अश्वती, डॉ. पी. षिनोज डॉ. सी. रामचन्द्रन, डॉ. ई.एम. अब्दुस्समद, डॉ. बोबी इग्नेशियस, डॉ. काजल चक्रवर्ती	डॉ. आर. नारायणकुमार
लघु पैमाने की मात्स्यिकी-क्रेडिट जरूरतों का निर्धारण	डॉ. एम.एस. मदन, डॉ. सी. रामचन्द्रन, डॉ. पी.एस. स्वातिलक्ष्मी, डॉ. बी. जोणसन	डॉ. आर. नारायणकुमार
मछली व्यापार और कल्याण	डॉ. एन. अश्वती, डॉ. एस.एस. राजु, डॉ. पी. षिनोज	डॉ. श्याम एस. सलिम
मात्स्यिकी सेक्टर में सामाजिक व्यवस्था और जेन्डर मुख्य धारा	डॉ. वी.पी. विपिनकुमार, डॉ. पी.एस. स्वातिलक्ष्मी, डॉ. बी. जोणसन	डॉ. सी. रामचन्द्रन
जैवविविधता मूल्यांकन और समुद्री संपदाओं का परिरक्षण	डॉ. आर. नारायणकुमार, डॉ. एन. अश्वती, डॉ. के. विनोद, डॉ. पी. लक्ष्मीलता	डॉ. के.के. जोषी

- **डॉ. ए. गोपालकृष्णन**, निदेशक ने पूसा, नई दिल्ली में दिनांक 6 और 7 अप्रैल, 2017 को उप महानिदेशक (मात्स्यिकी) की उपस्थिति में आयोजित वैज्ञानिकों की कैडर समीक्षा बैठक में भाग लिया।
समग्र भारतीय तट पर समुद्री शैवाल की पालन गतिविधियों को फैलाने के संबंध में उप महानिदेशक (मात्स्यिकी) और सचिव, भा कृ अनु प के साथ दिनांक 12 अप्रैल, 2017 को आयोजित बैठक में भाग लिया।
किसानों की आय वर्ष 2022 तक दोहराया जाने के संबंध में सचिवालय, तिरुवनंतपुरम में प्रोफसर पी. राजेन्द्रन, कुलपति, केरल कृषि विश्वविद्यालय की अध्यक्षता में दिनांक 21 अप्रैल, 2017 को आयोजित राज्य समन्वय समिति की बैठक में भाग लिया।
एन ए एस सी, नई दिल्ली में उप महानिदेशक (मात्स्यिकी) की अध्यक्षता में दिनांक 27 मई, 2017 को एन आइ सी आर ए तकनीकी कार्यक्रम का अंतिम रूप देने की कार्यशाला में भाग लिया।
तिरुवनंतपुरम में दिनांक 2 जून, 2017 को राज्य मात्स्यिकी मंत्री की अध्यक्षता में आयोजित समुद्री मात्स्यिकी पर राष्ट्रीय नीति (एन पी एम एफ) की बैठक में भाग लिया।
संस्थान की एस एफ सी के प्रस्तुतीकरण पर सचिव, डेयर एवं महानिदेशक, भा कृ अनु प, नई दिल्ली द्वारा दिनांक 19 और 20 जून, 2017 को आयोजित बैठक।
समुद्री जीव संपदाएं और पारितंत्र (सी एम एल आर ई), पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय की दिनांक 21 और 22 जून 2017 को आयोजित आर ए सी बैठक में भाग लिया।
- **डॉ. के.एस. मोहम्मद**, अध्यक्ष, एफ ई एम डी ने तिरुवनंतपुरम में दिनांक 22 मई, 2017 को आयोजित हितधारकों की बैठक में भाग लिया। सी एम एल आर ई, कोच्ची में “इन्टरनेशनल लीगली बाइन्डिंग इन्स्ट्रुमेंट अन्डर दि युनाइटेड नेशन्स कन्वेन्शन ऑन दि लॉ ऑफ दि सी (यु एन यर एल ओ एस) ओन दि कन्सर्वेशन एंड सस्टेनबिल यूज़ ऑफ मराइन बायोलॉजिकल डाइवर्सिटी ऑफ एरियास बियोन्ड नेशनल जुरिसडिक्शन” विषय पर 20 जून, 2017 को सी एम एल आर ई, कोच्ची में आयोजित बैठक में भाग लिया।
- **डॉ. आर. नारायणकुमार** ने एन एफ डी बी, हैदराबाद में 24 अप्रैल, 2017 को आयोजित मात्स्यिकी योजनाओं की केन्द्रीय समिति (सी सी एफ एस) की बैठक में भाग लिया।
मंडपम क्षेत्रीय केन्द्र में गणनाकारों के प्रशिक्षण के संबंध में 24-27 मई, 2017 को आयोजित

- जी यु एल एल एस परियोजना कार्यशाला में भाग लिया।
कृषि भवन, नई दिल्ली में दिनांक 19 और 20 जून, 2017 को आयोजित सी एम एफ आर आइ की एस एफ सी के प्रस्तुतीकरण बैठक में भाग लिया।
- **डॉ. पी.यु. ज़क्करिया**, अध्यक्ष, डी एफ डी ने 26-28 मई, 2017 के दौरान नई दिल्ली में एन आइ सी आर ए परियोजना की तकनीकी कार्यक्रम समापन कार्यशाला में भाग लिया।
भा कृ अनु प-सी आइ एफ टी, कोच्ची में मत्स्यन पोत कर्मी दल के भर्ती नियम के रूपायन के लिए गठित समिति की प्रथम बैठक में भाग लिया।
- **डॉ. वीरेन्द्र वीर सिंह**, प्रभारी वैज्ञानिक, मुम्बई अनुसंधान केन्द्र ने सी एस आइ आर-एन आइ ओ क्षेत्रीय केन्द्र, मुम्बई और भा कृ अनु प-सी आइ एफ ई, मुम्बई के अध्यक्षों के साथ तीनों संस्थानों द्वारा मुम्बई के समय श्रेणी महासागरीय आकलन (टी एस ओ ओ) के संबंध में 12 अप्रैल, 2017 को आयोजित बैठक में भाग लिया।
- **डॉ. वीरेन्द्र वीर सिंह**, प्रभारी वैज्ञानिक, मांगलूर अनुसंधान केन्द्र ने बेंगलूरु में संसदीय स्थायी समिति के निरीक्षण के संबंध में सचिव, कृषि, कर्नाटक सरकार द्वारा 11 अप्रैल, 2017 को बुलाई गयी बैठक में भाग लिया।
- **डॉ. ए.के. अब्दुल नाज़र**, प्रभारी वैज्ञानिक, मंडपम क्षेत्रीय केन्द्र ने कृषि भवन, नई दिल्ली में 15 अप्रैल, 2017 और 13-14 जून, 2017 को पशु पालन विभाग, भारत सरकार द्वारा आयोजित बैठक में भाग लिया।
- **डॉ. पी. लक्ष्मीलता**, प्रभारी वैज्ञानिक, मद्रास अनुसंधान केन्द्र ने एन्नोर कामराजर पत्तन क्षेत्र पर दो कार्गो जहाजों के टकराव पर हुए पर्यावरणीय प्रभाव और उपचारात्मक उपाय सुझाने के लिए पर्यावरण विभाग, तमिल नाडु सरकार द्वारा गठित समिति की 4 अप्रैल 2017 को चेन्नई में आयोजित प्रथम बैठक में भाग लिया।
- **डॉ. के. विजयकुमारन**, प्रधान वैज्ञानिक ने तेल के फैलाव पर होने वाले पर्यावरणीय प्रभाव के निर्धारण के लिए गठित समिति की 6 जून, 2017 को चेन्नई में आयोजित प्रथम बैठक में भाग लिया।
- **डॉ. एम. शिवदास**, प्रधान वैज्ञानिक ने मत्स्यन रोध के 45 दिवस से 60 दिवस तक बढ़ाए जाने के संबंध में 18 अप्रैल, 2017 को आयुक्त का कार्यालय, चेन्नई में आयोजित बैठक में भाग लिया।
- **डॉ. शुभदीप घोष**, प्रभारी वैज्ञानिक, विशाखपट्टणम क्षेत्रीय केन्द्र ने येलोफिन ट्यूना के पोत पर और संग्रहणोत्तर व्यवहार में सुधार

- विषय पर बी ओ बी पी द्वारा 12 जून, 2017 को विशाखपट्टणम में आयोजित एक दिवसीय कार्यशाला में भाग लिया।
- **डॉ. पी. कलाधरन** ने भा कृ अनु प-सी एम एफ आर आइ और जैवप्रौद्योगिकी विभाग (डी बी टी), नई दिल्ली द्वारा 9 मई 2017 को वेरावल, गुजरात में समुद्री शैवाल पैदावार और इसकी उपयोगिता पर आयोजित बुद्धिशीलता कार्यक्रम में प्रस्तुतीकरण दिया।
- **डॉ. पी. कलाधरन और डॉ. डी. प्रेमा**, प्रधान वैज्ञानिकों ने भा कृ अनु प-सी एम एफ आर आइ और मात्स्यिकी सहकारिता समिति, एरणाकुलम जिला द्वारा कोच्ची में 22 अप्रैल 2017 को “वेम्बनाड झील में कीचड़-इसकी साध्यताएं और खतरा” विषय पर आयोजित कार्यशाला में भाग लिया और प्रस्तुतीकरण दिया।
- **डॉ. पी.एस. स्वातिलक्ष्मी**, प्रधान वैज्ञानिक और **सुश्री गोमती**, वैज्ञानिक ने रिलायन्स फाउन्डेशन द्वारा तिरुवनंतपुरम के पूवार मत्स्यन गाँव में 24 जून 2017 को आयोजित कार्यशाला में भाग लिया।
- **डॉ. शोभा किष्कूडन**, प्रधान वैज्ञानिक ने पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन मंत्रालय, नई दिल्ली द्वारा 31 मई 2017 को महानिदेशक, वन एवं विशेष सचिव तथा प्रभारी, सी आइ टी ई एस प्रबंधन प्राधिकरण, भारत की अध्यक्षता में आयोजित सी आइ टी ई एस सेल की 12वीं बैठक में भा कृ अनु प-सी एम एफ आर आइ के प्रतिनिधि के रूप में भाग लिया।
- **डॉ. श्याम एस. सलिम**, प्रधान वैज्ञानिक ने 6 अप्रैल 2017 को एन ए ए आर एम, हैदराबाद में पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन मंत्रालय-एन सी एस सी एम, चेन्नई द्वारा प्रायोजित विशेषज्ञ परामर्श कार्यशाला में भाग लिया।
महासागर सूचना सेवाओं के लिए भारतीय नेशनल केन्द्र (आइ एन सी ओ आइ एस), हैदराबाद में 12-13 अप्रैल 2017 के दौरान आयोजित महासागर विज्ञान एवं संपदाओं पर परियोजना निर्धारण एवं निगरानी समिति (पी ए एम सी) की आठवीं बैठक में भाग लिया।
- **डॉ. पी. शिनोज**, वैज्ञानिक ने ‘किसानों की आय दोहराना’ विषय पर नई दिल्ली में 7 जून, 2017 को आयोजित बैठक में भाग लिया।
एन ए बी ए आर डी द्वारा 24-25 अप्रैल, 2017 के दौरान कोच्ची में आयोजित ‘मात्स्यिकी नीति पर राष्ट्रीय परामर्श बैठक’ में भाग लिया।
- **डॉ. आर. जयभास्करन**, वरिष्ठ वैज्ञानिक ने पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन मंत्रालय, नई दिल्ली द्वारा 31 मई, 2017 को “समुद्री स्तनियों के धंसन के प्रबंधन पर राष्ट्रीय रूपरेखा का विकास” पर आयोजित बैठक में भाग लिया।

- **डॉ. जयश्री लोका**, वरिष्ठ वैज्ञानिक ने एन बी एफ जी आर, लखनऊ में 20-21 अप्रैल, 2017 को 'टिकाऊ एशियन जलजीव पालन के लिए जलीय जीव स्वास्थ्य तथा एपिडेमियोलजी' विषय पर आयोजित अंतर्राष्ट्रीय परिसंवाद में भाग लिया।
- **डॉ. अमीर कुमार समल**, वैज्ञानिक ने बंगलूरु में 2-3 जून 2017 को आयोजित सोसाइटी फोर वेटिनरी बायोकेमिस्ट्स एंड बायो-टेक्नोलजिस्ट्स ऑफ इंडिया (एस वी बी बी आई) के 2वां वार्षिक सम्मेलन में भाग लिया और लेख प्रस्तुत किया।
- **सुश्री सलोनी शिवम**, वैज्ञानिक ने एफ एस आइ, मर्गुगाव में 11 मई 2017 को आयोजित भारतीय मात्स्यिकी सर्वेक्षण के मर्मगोवा ज़ोनल बैस की 14वीं परामर्श ग्रुप बैठक में भाग लिया।
- **डॉ. के.के. फिलिपोस, डॉ. एम.के. अनिल, डॉ. बी. संतोष और डॉ. रितेश रंजन** ने भा

कृ अनु प-सी एम एफ आर आइ मंडपम क्षेत्रीय केन्द्र में 8-9 जून 2017 के दौरान 'भारत में समुद्री संवर्धन और खुला सागर पिंजरा मछली पालन का विकास' विषय पर आयोजित राष्ट्रीय परामर्श बैठक में भाग लिया।

- **डॉ. रतीश कुमार आर. और श्री अजय डी. नाखवा**, वैज्ञानिकों ने बोम्बे नेचुरल हिस्टरी सोसाइटी (बी एन एच एस), मुम्बई में 21 जून, 2017 को आयोजित जैवविविधता कार्यशाला में भाग लिया।
- **श्रीमती एल. रम्या**, वैज्ञानिक ने मन्नार खाड़ी नेशनल पार्क एवं बायोस्फियर रिसर्व के लिए प्रबंध योजना की तैयारी के संबंध में भारतीय वन्य जीव संस्थान द्वारा 27 जून, 2017 को आयोजित हितधारकों की बैठक में भाग लिया।
- **सुश्री सलोनी शिवम**, वैज्ञानिक और श्री नारायण जी वैद्या, वरिष्ठ तकनीकी अधिकारी ने नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, कारवार द्वारा

25 अप्रैल, 2017 को आयोजित "संयुक्त हिन्दी कार्यशाला" में और क्षेत्रीय कार्यालय, सिन्डिकेट बैंक, कारवार में 30 जून, 2017 को आयोजित 45वीं अर्धवार्षिक न रा का स बैठक में भाग लिया।

- **श्री ताराचंद कुमावत**, वैज्ञानिक ने कोटा, राजस्थान में 24-26 मई, 2017 के दौरान आयोजित ग्लोबल राजस्थान अग्रिटेक मीट (जी आर ए एम) में भाग लिया।
 - **श्रीमती ई.के. उमा**, ए सी टी ओ (हिन्दी) ने भा कृ अनु प-मांगलूर अनुसंधान केन्द्र में 29 अप्रैल, 2017 को आयोजित संसदीय अध्ययन समिति द्वारा आयोजित निरीक्षण बैठक में भाग लिया।
- राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय द्वारा पुदुच्चेरी में 23 जून, 2017 को आयोजित एक दिवसीय राजभाषा तकनीकी संगोष्ठी में भाग लिया।

मानव संपदा विकास

आयोजित प्रशिक्षण	समन्वयन	अवधि	सहभागी
मात्स्यिकी विभाग, केरल के कार्यकारी कर्मचारियों के लिए प्रशिक्षण	डॉ. बोबी इग्नेशियस प्रभारी वैज्ञानिक, एच आर डी सेल	03-07 अप्रैल, 2017, कोच्ची	
एन आइ सी के ई-खरीद सीपीपी पोर्टल द्वारा समाधान के लिए प्रशिक्षण	श्रीमती पोन्नम्मा राधाकृष्णन	29-30 मई, 2017, कोच्ची	अनुसंधान केन्द्रों और
ए आइ एस-एफ एम एस एवं जी ई एम	डॉ. जे. जयशंकर, प्रधान वैज्ञानिक भा कृ अनु प-सी एम एफ आर आइ, कोच्ची	20-21 जून, 2017, कोच्ची	27- वैज्ञानिक 27- तकनीकी/ प्रशासनिक कर्मचारी
प्रशिक्षण कार्यक्रमों में सहभागिता	अवधि / केन्द्र	सहभागी	
लोक प्रशासन में नैतिकता (ई वी पी जी-11)	10-12 अप्रैल, 2017 आइ एस टी एम, नई दिल्ली	श्रीमती पोन्नम्मा राधाकृष्णन सहायक प्रशासनिक अधिकारी	
इकोपाथ और इकोसिम (ई डब्ल्यू ई) के उपयोग से आवास तंत्र पर आधारित मात्स्यिकी प्रबंधन	8-12 मई, 2017 जी आइ इज़ेड जैवविविधता कार्यक्रम गोवा	डॉ. सुजिता तोमस (प्रधान वैज्ञानिक) डॉ. के.आर. श्रीनाथ, डॉ. के.वी. अखिलेश डॉ. विनय कुमार वास (वैज्ञानिक गण)	
तटीय एवं महासागर विज्ञान में दूर संवेदन, जियोइन्फोर्माटिक्स एवं जी पी एस प्रौद्योगिकी	1 मई, 2017 से 23 जुलाई, 2017 भारतीय दूर संवेदन संस्थान, (आइ आइ आर एस), देहरादून	श्री पी. अब्दुल असीस (वैज्ञानिक)	

कार्मिक समाचार

नियुक्तियाँ			
नाम	पदनाम	केन्द्र	प्रभावी तारीख
श्रीमती निशा एस.	स्किल्ड सपोर्ट स्टाफ	विभिन्न अनुसंधान केन्द्र	23.06.2017
श्री मनोज राजेन्द्र जुलसवार	स्किल्ड सपोर्ट स्टाफ	कारवार अनुसंधान केन्द्र	24.06.2017
श्री जिमोष मोहन सी.एम.	स्किल्ड सपोर्ट स्टाफ	भा कृ अनु प-सी एम एफ आर आइ, कोच्ची	28.06.2017 (अपराह्न)

पदोन्नतियाँ			
नाम व पदनाम	पदोन्नत पद	केन्द्र	प्रभावी तारीख
डॉ. (श्रीमती) मिनी के.जी. वरिष्ठ वैज्ञानिक	प्रधान वैज्ञानिक	भा कृ अनु प-सी एम एफ आर आइ, कोच्ची	02.11.2015
श्रीमती एम.जी. चन्द्रमती, सहायक	सहायक प्रशासनिक अधिकारी	भा कृ अनु प-सी एम एफ आर आइ, कोच्ची	22.05.2017
श्रीमती जी. शैलजा वरिष्ठ तकनीकी अधिकारी	सहायक मुख्य तकनीकी अधिकारी	भा कृ अनु प-सी एम एफ आर आइ, कोच्ची	10.06.2016
श्री ए. डिव्सन जेबराज उच्च श्रेणी लिपिक	सहायक	टूटिकोरिन अनुसंधान केन्द्र	16.06.2017
श्री एल. पांडि राजु निम्न श्रेणी लिपिक	उच्च श्रेणी लिपिक	विशाखपट्टणम क्षेत्रीय केन्द्र	13.06.2017 (अपराहन)
स्थानांतरण			
नाम व पदनाम	से	तक	प्रभावी तारीख
श्रीमती एन.जी. सुप्रिया, सहायक	कालिकट अनुसंधान केन्द्र	भा कृ अनु प-सी एम एफ आर आइ, कोच्ची	24.04.2017
श्री संतोष कुमार, सहायक	भा कृ अनु प-सी एम एफ आर आइ, कोच्ची	दिघा अनुसंधान केन्द्र, दिघा	03.05.2017
श्री वी.सी. सुभाष, सहायक	भा कृ अनु प-सी एम एफ आर आइ, कोच्ची	भा कृ अनु प-सी एम एफ आर आइ का कृषि विज्ञान केन्द्र, नारक्कल	08.05.2017
श्री अगस्टस जूलिन राज सहायक	भा कृ अनु प-सी एम एफ आर आइ का कृषि विज्ञान केन्द्र, नारक्कल	भा कृ अनु प-सी एम एफ आर आइ, कोच्ची	08.05.2017
श्री सी.डी. मनोहरन, वैयक्तिक सहायक	कारवार अनुसंधान केन्द्र	भा कृ अनु प-सी एम एफ आर आइ, कोच्ची	11.05.2017
श्री के. मोहम्मद कोया, वैज्ञानिक	वेरावल क्षेत्रीय केन्द्र	भा कृ अनु प-सी एम एफ आर आइ, कोच्ची	05.06.2017
डॉ. श्रीनाथ के.आर., वैज्ञानिक	वेरावल क्षेत्रीय केन्द्र	भा कृ अनु प-सी एम एफ आर आइ, कोच्ची	08.06.2017
अंतर संस्थानीय स्थानांतरण			
नाम व पदनाम	से	तक	प्रभावी तारीख
श्री एच. गणेशा, वित्त एवं लेखा अधिकारी हैदराबाद	भा कृ अनु प-भारतीय तेल बीज अनुसंधान संस्थान (आइ आइ ओ आर)	भा कृ अनु प-सी एम एफ आर आइ, कोच्ची	08.05.2017
स्वैच्छिक सेवानिवृत्ति			
नाम	पदनाम	प्रभावी तारीख	केन्द्र
श्री संघाभाय लखाभाय परेदी	स्किल्ड सपोर्ट स्टाफ	30.03.2017	वेरावल क्षेत्रीय केन्द्र

अधिवर्षिता पर सेवानिवृत्तियाँ



श्री सुखदेव बार
वरिष्ठ तकनीकी अधिकारी
30.04.2017
पुरी क्षेत्र केन्द्र



श्रीमती बी.गौरी
सहायक प्रशासनिक अधिकारी
30.04.2017
विशाखपट्टणम क्षेत्रीय केन्द्र



श्री पी.वी.जोर्ज
सहायक हलवाई एवं रसोइया
30.04.2017
भा कृ अनु प-सी एम एफ आर आइ, कोच्ची



श्री वी.एस. गोपाल
तकनीकी अधिकारी
31.05.2017
मद्रास अनुसंधान केन्द्र



श्री पी. मोहम्मद अब्दुल मुहीदु
तकनीकी अधिकारी
31.05.2017
मंडपम क्षेत्रीय केन्द्र



श्री के.सी. पांडुरंगाचार
तकनीकी अधिकारी
30.06.2017
कारवार अनुसंधान केन्द्र



भा कृ अनु प-सी एम एफ आर आइ द्वारा प्रायोजित समुद्री पिंजरे में
मछली संततियों का संभरण (पृष्ठ सं. 7 देखें)



कडलमीन

सी एम एफ आर आइ समाचार

कडलमीन, सी एम एफ आर आइ समाचार केन्द्रीय समुद्री मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान, कोच्ची का तिमाही प्रकाशन है। यह प्रकाशन तिमाही के दौरान संस्थान की प्रमुख कार्यविधियों पर विवरण देने के साथ साथ अनुसंधान क्षेत्र की नई गतिविधियों और सफलताओं पर प्रकाश डालता है और प्रौद्योगिकी जानकारी को मछुआरा समुदाय तक विकीर्ण करता है।